तिकड़म

H
812.8
R 137 T

H
812.8
R137T

राजकुमार

तिकड़म

[आज के कथित नेताओं की राजनीतिक तिकड़मबाजी पर आधारित नाटक]

❖

राजकुमार

हिन्दी प्रचारक संस्थान
पिशाचमोचन, वाराणसी-1

Hindi Pracharak Sansthan
Varanasi

Library IIAS, Shimla
H 812.8 R 137 T
00039609

सर्वाधिकार सुरक्षित

नवम्बर : १९७१

११००

❖

मूल्य : २.०० रु.

INSTITUTE OF ...
Acc. No. 39609
Date 18/5/72
SIMLA

H
812.8
R137

प्रकाशक	मुद्रक
हिन्दी प्रचारक संस्थान	श्री माहेश्वरी प्रेस
पो. बॉ. १०६, पिशाचमोचन	भाट की गली (गोलघर)
वाराणसी–१	वाराणसी–१

आमुख

□

राजनीतिक दलों के कथित नेताओं की बैठकबाजी का प्रतिनिधि है 'तिकड़म' नाटक। इसमें आचरण के स्वाभाविक रूप को बनाये रखने की चेष्टा की गयी है। वार्तालाप की भाषा स्वाभाविक है। कहीं-कहीं सजीवता के लिए उस भाषा का पुट दे दिया गया है जिसको आमतौर पर 'बनारसी' कहते हैं। कथावस्तु को अनावश्यक रूप में रहस्यपूर्ण या नाटकीय नहीं बनाया गया है। इस दृष्टि से केवल उतनी ही छूट ली गयी है, कथा-प्रवाह को बनाये रखने के लिए जितनी आवश्यक है। सम्भवतः यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि 'तिकड़म' नाटक में कथा गौण है और चरित्र-चित्रण प्रधान।

अब यह कोई रहस्य की बात नहीं रह गयी है कि कथित राजनीतिक नेताओं से नये रईस जमकर लाभ उठाते हैं। दिन को रात बताने में तनिक भी हिचक न दिखाने वाले ऐसे रईस, स्वार्थ को खटाई में पड़ता देखकर जिस तरह रंग बदलते हैं, उसका प्रतिनिधित्व नाटक में सेठ तिकड़म मल करते हैं। उनका करिश्मा यह स्पष्ट कर देता है कि रातोरात धनपति बनने वाले, खुशामद करने और जाल बट्टा रचने में जितने माहिर होते हैं; बदला लेने के लिए राजनीतिक स्तर के हथकंडे से काम लेने में उससे कम माहिर नहीं होते हैं। सेठ तिकड़म मल के चरित्र में इस विशेषता को प्रकट करने के लिए नाटकीय तत्त्व का सहारा लेना

पड़ा है। इस अंश के अलावा शेष पूरा नाटक किसी भी जानकार को ऐसा ही लगेगा मानो वह प्रचलित राजनीतिक जीवन का चित्रण चित्रपट पर देख रहा हो।

'तिकड़म' नाटक में केवल पुरुष पात्र ही हैं, अतः छोटी-छोटी नाट्य संस्थाएँ इसे सरलतापूर्वक अल्प व्यय में रंगमंच पर प्रस्तुत कर सकती हैं। साधनों के अनुरूप समायोजन की पर्याप्त गुंजाइश है। नाटक के क्रिया-कलाप को सख्त बन्धनों से बाँधा नहीं गया है। उद्देश्य मात्र यह है कि नाटक उस आचरण का अमंगलकारी रूप समाज के सामने ले आने का माध्यम बने, जो सर्व साधारण के जीवन पर छा गया है, जिसके कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है और जिस प्रकार भी हो, अपना उल्लू सीधा करने की प्रवृत्ति को बल मिला है।

प्रयास तो प्रयास ही कहा जा सकता है। उसकी उपलब्धि का रूप कुछ समय बीतने के बाद ही स्पष्ट होता है। मेरा अनुमान है कि इसका रूप स्पष्ट होने के बाद ऐसे प्रयास की महत्ता, साहित्य और समाज, दोनों के पुजारी समान रूप में स्वीकार करेंगे।

—राजकुमार

पात्र-परिचय

मंडलानन्द	बड़े नेता
वंचक	बैठकबाज
वलवल सिंह	भोजनभट्ट छाप
ढनमनिया गुरु	तिकड़मी कार्यकर्ता
शौकत मियाँ	दलाल
तिकड़म मल	चालबाज सेठ
सुनील	ईमानदार कार्यकर्ता
अरुण	सुनील का सच्चा मित्र

अंक : एक

(दफ्तर के ढंग से सजा हुआ कमरा जिसमें फर्शपर दरी, गद्दा-चाँदनी
बिछी है। रंग-मंच के मध्य भाग पर चौकी की ऊँचाई का
एक लम्बा टेबुल पड़ा है जिस पर टेलीफोन रखा है।
रंग-मंच के दक्षिण भाग पर टेबुल के पास
वंचक बैठा है और टेबुल के पीछे
मसनद के सहारे बैठे मंडलानन्द
टेलीफोन का रिसीवर
पटकते नजर आते हैं)

मंडलानन्द —(पल्थी बदलकर दक्षिण अर्द्धबाहु को सामने के टेबुल पर टिकाते हुए) बीस-बीस बार टेलीफोन कीजिये, पता ही नहीं चलता है।

वंचक —(सामने की ओर नजर फेंकते हुए) कहीं मौज लेते होंगे।

मंडलानन्द —तुम्हारी यही आदत खराब है।

वंचक —(खुशामद के स्वर में) मौके पर सुनील बाबू जी-जान से भिड़ जाते हैं।

मंडलानन्द —कड़वा मिजाज किसी से पटने नहीं देता।

वंचक —(प्रसन्न मुद्रा में) सबको मिलाजुला कर चल ही नहीं सकते।

मंडलानन्द —(**उपदेशक के रूप में**) राजनीति हैं। सिद्धान्त छाँटने से काम नहीं चलता है। हर तरह के मोहरे से काम लेना पड़ता है।

(टेलीफोन की घंटी बजती है। वंचक रिसीवर उठाता है)

वंचक —हलो......हाँ-हाँ......नमस्कार......हाँ हैं......अरे बीस बार टेलीफोन कर चुके हैं; अच्छा......हाँ......दे रहा हूँ। **(रिसीवर मंडलानन्द की ओर बढ़ाते हुए)** लीजिये।

मंडलानन्द —(**रिसीवर के मुँह पर हाथ रखकर वंचक से**) कौन है ?

वंचक —सुनील।

मंडलानन्द —(**रिसीवर कान से लगाकर**) हाँ......नमस्कार......तुम्हारा पता ही नहीं चलता..... कितनी जगह टेलीफोन किया......ठीक है......सब काम होना चाहिये न......इधर भी तो देखना है......अरे, वक्त कहाँ है। रुपया-पैसा इकट्ठा करना है।......अरे नहीं, हाँके विना कोई हिलनेवाला नहीं है। अच्छा..... हाँ ठीक है......हाँ, चले आओ......नमस्कार !

(मंडलानन्द टेलीफोन रखकर छत की ओर ताकने लगते हैं)

वंचक —आ रहे हैं ?

मंडलानन्द —(**उसी मुद्रा में**) कहा तो है।

(सेठ तिकड़म मल का प्रवेश)

मंडलानन्द —(**मुस्कराकर**) आइये तिकड़ममल जी। भला सूरत तो नजर आयी।

(**वंचक, मंडलानन्दकी ओर जाने के लिए तिकड़म मल का रास्ता छोड़ता है। तिकड़म मल दोहरा-सा होकर मंडलानन्द के पास पहुँचकर बैठ जाता है**)

तिकड़म मल—आप याद करें और हाजिर न होऊँ, यह हो नहीं सकता है। कहिये स्वास्थ्य कैसा है ?

मंडलानन्द —(**तिकड़म मल की ओर गरदन घुमाकर मुस्कराते हुए**) ठीक ही है।

तिकड़म मल—(**वंचक से**) कहो वंचक जी, मजे में तो हो।

वंचक —(**खुशनजर आने की कोशिश करते हुए**) अरे, हाल-चाल क्या है, बस चल जाता है। आप लोगों की कृपा दृष्टि घूमें तो हालचाल बने।

तिकड़म मल—(**पीछे की ओर तनते हुए**) वाह रे वंचक जी ! अरे, तुम लोगों के भरोसे जी-खा रहे हैं। चल जाता है किसी तरह !

वंचक —अजीब हाल है, सेठ लोग कभी खुश नजर ही नहीं आते। बस......

(**एक व्यक्ति के साथ ढनमनिया गुरु को आते देखकर वंचक चुप हो जाता है। ढनमनिया गुरु मंडलानन्द को नमस्कार करते हैं। मंडलानन्द मौन रहकर गम्भीरता पूर्वक सिर झुका लेते हैं**)

ढनमनिया —(**कमर से आगे की ओर झुककर बैठते हुए साथ के व्यक्ति**

की ओर आँखों से संकेत कर) अपने क्षेत्र में बहुत प्रभावशाली हैं। आजकल चक्कर में फंसे हैं।

(ढनमनिया के साथ का व्यक्ति बगल में बैठकर मंडलानन्द को दो बार नमस्कार करता है)

मंडलानन्द —**(उपेक्षा भाव से ढनमनिया गुरु से)** तुम्हारा चक्कर कभी खत्म भी होगा।

ढनमनिया —**(इतमिनान जाहिर करने वाली मुद्रा में गर्दन हिलाते हुए)** जिन्दगी का नाम ही चक्कर है। वह कहाँ खत्म होता है। क्षेत्र के लोग आ जाते हैं तो डोलना ही पड़ता है।

मंडलानन्द —खूब डोल रहे हो। कुछ काम भी हो रहा है?

ढनमनिया —काम से ही निकला था कि **(बगल के साथी की ओर संकेत करके)** मिल गये। बस, यहाँ आना पड़ा।

मंडलानन्द —भूमिका छोड़ो गुरु, अपना मतलब बताओ। तुम्हारा पैतरा खूब जानता हूँ।

ढनमनिया —लीजिये, अब आप नहीं जानेगें। रात-दिन आपके अंडर में काम करता हूँ।

मंडलानन्द – अच्छा, मतलब बताओ अपना।

ढनमनिया —अरे मतलब क्या है! मामूली बात है **(साथी की ओर संकेत कर)** खेत सूख रहा था। नहर काटकर इन्होंने थोड़ा खेत भर लिया। अब अफसर जान के पीछे पड़ गये हैं।

मंडलानन्द – **(वंचक की ओर देखकर)** देखा न! आप नहर काट दें, खेत उजाड़ दें, झोपड़ी फूँक दें और जब कानून काम करने लगे तो, दौड़कर मंडलानन्द के पास

चले आइये। उनके हाथ तो सब ने गेंहूँ बेंच रखा है। जायँगे कहाँ ? (**ढनमनिया गुरु को देखते हुए**) जाइये, माफी-वाफी मांग कर मामला सलटा लीजिये।

ढनमनिया —अरे वह एक्जक्यूटिव इंजीनियर का बच्चा चारा-पानी भी दुरदुराता है। कमबख्त, कुछ सुनने को तैयार ही नहीं है।

मंडलानन्द —(**उत्तेजित होकर**) घूस ले तो बदमाश, न ले तो बदमाश ! मालुम नहीं, आप लोग चाहते क्या हैं ! (**मुँह दूसरी ओर घुमाकर**) खैर देखा जायगा, जाइये आप।

ढनमनिया —(**आगे को ओर झुककर धीरे से**) आप जरा टेलीफोन...

(**मंडलानन्द आँखें तरेर कर ढनमनिया गुरु को देखते हैं। गुरु चुप हो जाते हैं**)।

वंचक —हाँ तिकड़म मल जी, इस बार तो सीजन आप लोगों का खूब चला।

तिकड़म मल—(**निराशा भरे स्वर में**) अरे क्या चला ! सेल्स टैक्स ने व्यापार भी हराम कर दिया है।

वंचक —(**हाँ में हाँ मिलाने के स्वर में**) ई...सब तो और चौपट कर रहे हैं।

तिकड़म मल—(**तेज स्वर में**) चौपट ! ऐसा चौपट कर रहे हैं कि बोलो तो आफत, न बोलो तो आफत।

वंचक —(**लापरवाही से**) चलिये, सब ठीक हो जायगा। बोलिये चंदा कितना दिला रहे हैं ?

तिकड़म मल—(**भड़क उठने की मुद्रा में**) चंदा-वंदा का नाम मैंने लिया तो जूता ही पड़ेगा।

मंडलानन्द —(**तिकड़म मल पर आँखें गड़ाते हुए मुस्कराकर**) जैसा नाम, वैसा करतव ! लाइसेंस लेकर रकम चीर ली। कुछ देने के नाम पर ठंढी साँस !

तिकड़म मल—अरे, हम वाहर कहाँ हैं ! उस अफसर का तवादला हो जाय, तो चंदा ही चंदा मिलने लगेगा !

ढनमनिया —(**सिर झुकाकर गरदन हिलाते हुए**) रगड़ तो खूब रहा है।

तिकड़म मल—रगड़ क्या रहा है गुरु ! रकम पिला दी जाय तो सब ठंढे हो जाते हैं !

ढनमनिया —आप चूक कैसे गये ?

मंडलानन्द —(**डाँटकर**) ए ढनमनिया, जाकर कुछ काम-वाम करो। (**तिकड़म मल से**) झगड़ा-झंझट देखा जायगा, कुछ काम तो होना ही चाहिए।

(**शौकत मियाँ का प्रवेश। वह झुककर सलाम करते हैं और बैठ जाते हैं**)

मंडलानन्द —(**शौकत को देखकर**) कहो शौकत मियाँ, क्या हुकुम है ?

शौकत —मेहरवानी चाहिए हुजूर की। मुख़ालिफ ऐसा गिरेंगे कि मुँह से आवाज नहीं निकलेगी।

मंडलानन्द —वैसे ही तो नहीं गिरेंगे, जैसे उस वार गिरे थे ! हाफिज जी क्या पकड़े गये, इस्लाम खतरे में पड़ गया। जिसको देखो, वही मुँह फुलाये था। (**तिकड़म मल की ओर घूमकर**) यह दूसरा नमूना देखिये सेठ जी।

तिकड़म मल—आप लोग सामर्थ्यवान हैं। भला आपका......

मंडलानन्द —(**बीच में काटकर**) पैतरा छोड़ो सेठ। बोलो, कर क्या रहे हो ?

तिकड़म मल—आपका आदेश है तो कुछ होगा ही। लेकिन हम लोगों की जान बचनी चाहिये।

मंडलानन्द —(**व्यंग कसने के स्वर में**) फाँसी लग रही है क्या ? कह दिया कि देखा जायगा। अब.........

तिकड़म मल—सचमुच, यही समझिये कि फाँसी लग रही है। ऐसा फेरवट बाँधे है कि हिलना भी मुश्किल है।

मंडलानन्द —अच्छा, अच्छा ! देखा जायगा। (**शौकत मियाँ से**) कैसे चले ?

शौकत मियाँ—इलेक्शन के वक्त लोग सोंसा छोड़ ही देते हैं। मसजिद की दीवार का मामला लेकर यारों ने हंगामा खड़ा कर दिया है। पुलिस जरा सख्त हो जाय तो सारा इलाका साथ हो जायगा।

ढनमनिया —लगायो न शौकत मियाँ हिन्दू-मुसलमान का सवाल। रास्ते में दीवार रही नहीं तो अब क्यों बनवायी जा रही है ?

शौकत मियाँ—(**गुरु को छोड़कर वंचक की ओर देखते हुए**) जाहिल है गुरु.........

ढनमनिया —(**आवेश में भरकर बीच में ही**) जबान सम्हालकर बोलो। जाहिल-वाहिल कहा......

शौकत मियां—(**ढनमनिया गुरु को ओर देखकर**) अरे, वाह गुरु ! हवा को मत काटो। मैं तुम्हारी शान के खिलाफ कुछ कह सकता हूँ ?

(**मंडलानन्द के अलावा और सब ढनमनिया गुरु का मुँह देखते हैं**)

ढनमनिया —(**रोष भरे स्वर में**) कह्यो नहीं कि जाहिल हैं गुरु ?

शौकत मियां—(**निहायत अदब से**) गलतफहमी हो गयी कुछ। मेरा मतलव था कि सब लोग जाहिल हैं गुरु, बेवकूफ हैं। जजबात में वह जाते हैं।

(**ढनमनिया गुरु मुँह लटका लेते हैं**)

वंचक —ग्ररे शौकत मियां, सब जाहिल नहीं, खूब ग्रक्ल-मन्द हैं। जब पार्टी का काम ग्राता है, तब सौदा तैयार।

शौकत मियां—जो वंचक भाई, ग्राप भी वही बोलने लगे जो मुखालिफ फिरकापरस्त बोलते हैं। सियासत में मोहरा बैठाया ही जाता है।

(**सुनील का प्रवेश। मंडलानन्द को नमस्कार करने के बाद सबकी ओर देखकर बैठ जाता है**)

मंडलानन्द —(**नमस्कार का उत्तर देने के बाद मुस्कराकर**) कमाल है ! मिलना ही मुश्किल है।

सुनील —संयोग की वात हैं।

वंचक —(**सुनील की ओर संकेत करते हुए मंडलानन्द से**) विजी ग्रादमी हैं।

ढनमनिया —कहो सुनील भाई, दहाड़ना-वहाड़ना कब शुरू करोगे ? अब हमला होना चाहिए भाई।

(**सुनील चुप रहता है**)

शौकत मियां—(**मंडलानन्द से**) हुजूर, जरा कप्तान साहव से वात कर लेते तो सब ठीक हो जाता।

(**ढनमनिया गुरु टेलीफोन लेकर डायल घुमाते और रिसीवर कान से लगा लेते हैं**)

तिकड़म मल—(मंडलानन्द से) तो आज्ञा लूँ !

वंचक —(तिकड़म मल से) वैठिये, जल्दी क्या है। चले जाइयेगा !

ढनमनिया —हलो...हलो...इञ्जीनियर साहब हैं...मंडलानन्द जी के यहाँ से...हाँ-हाँ नमस्कार...नमस्कार... हाँ...दे दो...नमस्कार...कौन इञ्जीनियर साहब ...हाँ मैं ढनमनिया गुरु...अरे साहब, क्यों परेशान कर रखा है...हाँ-हाँ ..सव चलता है . अच्छा लीजिये, वात कीजिये।

(ढनमनिया गुरु रिसीवर मंडलानन्द की ओर बढ़ा देते हैं। इस बीच मंडलानन्द क्षोभ के भाव प्रकट करते रहते हैं। रिसीवर लेकर एक हाथ से उसका मुँह दबा देते हैं और सबकी ओर देखते हैं)

मंडलानन्द —(मुस्कराकर तिकड़म मल से) देखा गुरु का तिकड़म ? (रिसीवर का मुँह छोड़कर कान से लगाते हुए) हलो ·· हाँ . नमस्कार क्या मामला है...है तो वहुत नामुनासिव वात। हाँ...हाँ...अरे हो गयी गलती ...देख लेना चाहिए...हाँ ..नमस्कार ! (रिसीवर रख देते हैं)।

(शौकत मियां जरा गौर से ढनमनिया गुरु को देखते हैं और आँख के इशारे से समझाते हैं मंडलानन्द से पैरवी के लिए। ढनमनिया गुरु रोष में मुँह घुमा लेते हैं। तिकड़म मल, गुरु से आँखे मिलाकर अपनी ओर आकृष्ट करना चाहते हैं ईर्ष्यालु होकर वंचक अपनी ओर तिकड़म मल को आकृष्ट करना चाहता है)

वंचक —तिकड़म मल जी, आपका मामला क्या है ?

तिकड़म मल—(**वंचक की ओर मुँह घुमाकर**) अरे मामला क्या है। कुछ कैश मेमों कटे थे। साहबजादे को तो आप जानते ही हैं। नवाब हैं। कुछ मालूम नहीं है। मुनीब की गैरमौजूदगी में उन्होंने नयी किताब पर कैश मेमों बना दिये। माल एक ही। दाम उलटा-सीधा। सेल्स टैक्स अफसर के हाथ दोनों लग गये। बस, उन्होंने तिल को ताड़ बना दिया।

ढनमनिया —(**सिर हिला-हिलाकर**) मामला संगीन है।

तिकड़म मल—अरे गुरु संगीन क्या है, संगीन बनाया जा रहा है।

वंचक —अरे, अफसर खुरचाली होते ही हैं।

ढनमनिया —सुना है, कई व्यापारियों का मामला है !

वंचक —(**तिकड़म मल से**) कस कर विरोध कीजिये।

ढनमनिया —व्यापार मंडल के प्रस्ताव का कोई असर नहीं हुआ तिकड़म मल जी ! अब कोई तिकड़म लगाइये।

वंचक —(**तिकड़म मल से**) आप लोग मेमोरेण्डम तैयार करके भेजिये। उसकी कापी मुझको दीजिये।

ढनमनिया —(**तिकड़म मल से**) सेल्सटैक्स अफसर से बात की जाय। देखा जाय क्या होता है।

वंचक —(**तिकड़म मल से**) अफसरों को मुँह लगाना ठीक नहीं है। आप कापी दीजिये। मैं देख लूँगा।

ढनमनिया —(**तिकड़म मल से**) बारह बजे तक मैं घर पर रहता हूँ। आप आ जाइये तो समझा जायगा।

तिकड़म मल—अरे समझना क्या है गुरु ! टेलीफोन पर जरा

(**मंडलानन्द की ओर इशारा करके**) बातें करा दो। सब ठीक हो जायगा।

(**ढनमनिया गुरु हौसले से मंडलानन्द की ओर देखते हैं। बलबल सिंह का प्रवेश। वंचक और ढनमनिया दोनों एक साथ बोल उठते हैं—'आइये नेताजी, आइये नेताजी।' बलबल सिंह सबको बारी-बारी से नमस्कार कर बैठ जाता है।**)

बलबल सिंह—(**मंडलानन्द से**) अब आपको क्षेत्र में चलना होगा।

मंडलानन्द —आते देर नहीं, फरमान जारी।

बलबल सिंह—अरे कसकर भिड़ाभिड़ी है। (**तिकड़म मल को ओर देखकर**) कुछ मालटाल दिलाओ सेठ जी। बिना पैसा पाये कोई हिलता भी नहीं है।

ढनमनिया —सेठ जी बिचारे चक्कर में हैं।

बलबल सिंह—चक्कर कैसा गुरु? (**तिकड़म मल की ओर घूमकर**) क्या मामला है?

तिकड़म मल—(**मँडलानन्द की ओर देखकर**) आपकी कृपा हो जाय तो कुछ भी नहीं है।

वंचक —सेलसटैक्स में झंझट है। दम क्या रखा है।

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) सेठ जी को समझा दिया है। (**तिकड़म मल की ओर देखकर**) सब ठीक हो जायगा सेठ जी।

बलबल सिंह—(**वंचक से**) जरा मिलाओ टेलीफोन।

(**वंचक हाथ बढ़ाता है लेकिन ढनमनिया गुरु पहले ही झपट कर रिसीवर उठा लेते हैं और टेलीफोन खींचकर डायल घुमाने लगते हैं**)

ढनमनिया —(**रिसीवर कान से लगाकर**) हलो...कौन...साहब हैं...मंडलानन्द जी के यहाँ से...हाँ...हाँ....दे दो... हाँ, नमस्कार...ढनमनिया गुरु....तिकड़म मल जी का क्या मामला है...हाँ...हाँ...ठीक है...कल मिल लिया जाय...ठीक...तय रहा ।

(**ढनमनिया गुरु रिसीवर रख देते हैं**)

ढनमनिया —(**तिकड़म मल से**) कल चलिये । वहीं देखा जायगा ।

वंचक —(**खीजकर ढनमनिया गुरु से**) टेलीफोन मिलाया ही था तो (**मंडलानन्द की ओर संकेत करके**) इनसे बात करा देते ।

ढनमनिया —क्या बात करा देते ! इसमें रखा क्या है ।

बलबल सिंह—(**तिकड़म मल से**) ठीक है, ठीक है । गुरु सब फिट करा देंगे ।

वंचक —ढनमनिया गुरु घिस-पिस लगाये ही रहते हैं ।

ढनमनिया —राजकाज है । अफसर को ऐसा नहीं लगना चाहिये कि दबाव डाला जा रहा है ।

बलबल सिंह—ठीक कहते हो गुरु । सब 'पालिटिक्स' सीख गये हैं । विरोधियों से भी टिप्पस भिड़ाये रहते हैं ।

वंचक —ऐसी की तैसी । वह क्या टिप्पस भिड़ायेंगे ।

ढनमनिया —— राजनीति है, राजनीति वंचक जी । जहाँ जो दाँव लगे, वही लगाना चाहिये ।

वंचक —(**उत्तेजित होकर**) ई नौटंकी मैं नहीं जानता । अफसर सब पबलिक के नौकर हैं । तेरह-बाइस करें तो उनसे भिड़ना चाहिये ।

ढनमनिया —जरूर भिड़ना चाहिये । लेकिन वंचक जी, साँप

की विल में हाथ डालने से पहले विच्छू पकड़ने का मंत्र तो सीख ही लेना चाहिये ।

(**सब हँसते हैं । मंडलानन्द केवल मुस्कराते हैं**)

मंडलानन्द —(**ढनमनिया से**) लफ्फाजी, ढनमनिया गुरु कोई तुम से सीखे ।

ढनमनिया —लीजिये, और राजनीति में रखा क्या है । इसको पकड़ो, उसको फंसाओ । इसको मिलाओ, उसको गिराओ । इसको धरो, उसको छोड़ो । काम वनना चाहिये । फेंफियाने से कुछ होता है क्या ?

वंचक —(**हतप्रभ-सा**) इससे ही सव चौपट हो गया है ।

ढनमनिया —चौपट नहीं कद्दू हो गया है । चौपट क्या होगा । रियाज न करे तो पटकनिया खायेगा ही ।

वलवल सिंह—(**ढनमनिया से**) ऐ गुरु, वक-वक बंद करो । (**सेठ तिकड़म मल की ओर घूमकर**) कहो सेठ जी, कव हिसाव वैठेगा ?

ढमनमिया —(**शौकत मियाँ से**) अरे शौकत मियाँ, नेताजी तुम्हारे क्षेत्र के हैं । पकड़ो न इनको ।

शौकत मियाँ—(**एक-एक बार ढनमनिया और बलबल सिंह की ओर नजर घुमाकर**) आप और नेता जी में मैं फर्क नहीं मानता हूँ ।

वलवल सिंह—(**शौकत से**) शौकत मियाँ, तुम भाई अव जल्दी से सव फिट करो । तुम्हारे यहाँ वड़ी गड़वड़ी चल रही है ।

शौकत मियाँ—लाहौल बिला कूवत । कैसी वात कहते हैं हुजूर । एक वार घूम जाइये । सव ठीक हो जायगा ।

कमवख्त मुखालिफ मसजिद की दीवार का मामला लेकर जजवात इस तरह भड़का रहे हैं कि सव की अक्ल ही ख़राव होती जा रही है।

वलवल सिंह—तो अक्ल ठीक करो भाई। वंचक जी को पकड़ो। (**ढनमनिया को दिखाकर**) गुरु है हीं। सव काम जल्दी से फिट हो जाना चाहिये।

शौकत मियाँ—(**ढनमनिया गुरु की ओर देखकर**) गुरु न जाने क्यों नाराज हैं। जरा कप्तान साहव से कह देना है। फिर देखिये, एक एक ओट न गिरवा दूँ तो शौकत मियाँ नाम नहीं।

ढनमनिया —(**शौकत मियाँ से**) शौकत मियाँ, तुम्हारे इलाके में कितने वोट हैं ?

वंचक —अरे वोट कितने हैं, होंगे तीन-चार हजार।

शौकत मियाँ—(**कुछ उछल कर**) वल्लाह, आप भी क्या फरमाते हैं ! अरे हम लोग कच्चे खिलाड़ी हैं क्या ? जिस मकान में सात वोट है, वहाँ चौदह दर्ज करा दिये हैं। देहात से आदमी लाने का हिसाव दुरुस्त रहे तो सात हजार वोट गिरेंगे।

बलवल सिंह—है न तिकड़म की वात ! देहात से आदमो कौन लायेगा ?

शौकत मियाँ—अरे आदमी लाना कोई पहाड़ उठाना है। फी आदमी एक रुपया खर्च ही तो बैठेगा। इन्तजाम करने के लिए खादिम तो है ही।

ढनमनिया —(**मुस्कराकर**) शौकत मियाँ, तुम्हारा मतलव यह है कि तीन-चार हजार रुपये तुमको मिल जाय तो सव ठीक हो जायगा।

बलबल सिंह—(**उत्तेजित होकर**) यह सब झंझट है। रुपया कहाँ है ? पूंजीपतियों की पार्टी है क्या ?

तिकड़म मल—(**मंडलानन्द से**) तो आज्ञा दीजिये।

मडलानन्द —(**अर्थभरी दृष्टि से**) तब ?

तिकड़म मल—वातावरण ठीक हो जाय तो आप जो चाहेंगे, वही होगा।

मंडलानन्द —(**तैश में आकर**) यह सब सौदेबाजी मुझको पसन्द नहीं है। मुझको छोड़कर कौन करता है काम ?

ढनमनिया —(**सेठ की ओर देखकर**) कल आ रहे हैं न सेठ जी ?

वंचक —(**मंडलानन्द से**) आप सेठ जी से मेमोरेण्डम लेकर नोट लिख दें। काम कुछ हो ही जायगा।

बलबल सिंह—(**झल्लाकर**) नहीं-नहीं, इस समय नोट-वोट लिखने की जरूरत नहीं है। प्रचार हो गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे। फोन पर डाँट-डपट देना ठीक है।

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) एप्वांइटपेट ही गया है। (**सेठ की ओर देखकर**) सेठ जी कल आ जाँय, कोई न कोई रास्ता निकल ही आयेगा।

बलबल सिंह—बस-बस गुरु, तुम्हारा हिसाब ठीक है।

वचक —नेताजी, आप टेलीफोन कर दीजिये, झंझट खत्म।

(तिकड़म मल उठकर मंडलानन्दको नमस्कार करते हैं और ढनमनिया से नजर मिलाने के बाद मुस्कराकर चले जाते हैं। वंचक मुँह लटका लेता है)

मंडलानन्द —(**दोनों अग्रबाहुओं को सामने के टेबुल पर टिकाकर**) कैसा जमाना है। अपना काम होगा तो छाती पर

सवार हो जायेंगे। हमारा काम रहता है तो फूँक सरक जाती है।

बलबल सिंह—(**मुँह विचकाकर**) अरे, इन पूँजीपतियों का क्या भरोसा ? इनको कम्युनिस्ट ही ठीक रखते हैं।

ढनमनिया —क्या कम्युनिस्ट ठीक रखते ? वह भी सेठ जी के दरवाजे पर चप्पल चटकाते घूमते हैं।

वंचक —अरे, तो सेठ जी फटकार भी देते हैं।

ढनमनिया —फटकारते नहीं क्या करते हैं। जल्दी से जान छुड़ाने का हिसाब बाँधते हैं। कुछ मालूम भी है ?

वंचक —(**तेज आवाज में**) मालुम तो सब तुमको है गुरु! बोलते हो ऐसे, जैसे तुमसे ज्यादा कोई कुछ जानता ही नहीं है।

ढनमनिया —हराम का खाना, मस्जिद में सोना नहीं है। जानने के लिए रियाज देना पड़ता है।

वंचक —क्यों नहीं, क्यों नहीं। दलाली भी रियाज ही तो है।

ढनमनिया —हाथ न लगे तो अंगूर खट्टे। ड्राइङ्ग रूम में बैठकर तीसमार खां बनने से नहीं चलता वंचक जी।

बलबल सिंह—(**मंडलानन्द की ओर देखकर एक हाथसे वंचक और दूसरे हाथ से ढनमनिया की ओर इशारा करते हुए**) आपने दो मुर्गे अच्छे पाल रखे हैं जो मौका मिलते ही एक दूसरे पर झपटने से बाज नहीं आते।

(**मंडलानन्द मुस्कराते हैं। वंचक मुँह लटका लेता है। ढनमनिया गुरु ऐसा मुँह बनाते हैं मानो उन्होंने कुछ सुना ही नहीं**)

शौकत मियां—(मंडलानन्द से) क्या हुकुम है हुजूर का ?

मंडलानन्द —(वंचक से) मिलाओ भाई टेलीफोन। शौकत मियां ऐसे ही जाने वाले नहीं हैं।

(शौकत मियां खुश नजर आते हैं। वंचक टेलीफोन का डायल घुमा कर नम्बर मिलाता है)

वंचक —हलो...हाँ...जयहिंद...मंडलानन्द जी के यहाँ से...साहब को दो...क्या कहा...कहाँ गये हैं...कल लौटेंगे...अच्छा...अच्छा . जयहिंद। (शौकत की ओर देखकर रिसीवर रखते हुए) साहब दौरे पर हैं। कल आयेंगे। कल देख लिया जायगा।

शौकत मियां—(उठकर मंडलानन्द और वंचक को बारी-बारी से सलाम कर) अच्छा, कल हाजिर हो जाऊँगा हुजूर।

(शौकत मियां का गमन)

बलबल सिंह—(सब को देखकर) चुनाव लड़ना है कि बेइज्जत होना है। इसकी खुशामद, उसकी खुशामद। शौकत मियां की ही आग लगायी हुई है।

ढनमनिया —यह सब तिकड़म है, तिकड़म नेताजी। चुनाव का समय, कुछ लोगों के रोजगार का समय होता है। बेचारे कुछ करेंगे नहीं तो खायेंगे क्या ?

मंडलानन्द —अच्छा गुरु, तुम अपना रोजगार देखो (सुनील की ओर देखकर) कुछ काम की भी बात होने दो।

ढनमनिया —(मंडलानन्द की बात अनसुनी कर के सुनील से आँख मिलाने की कोशिश करते हुए) वक्त लड़ाई के मैदान में उतरने का आया तो वैराग्य हो रहा है !

(सुनील एक बार ढनमनिया गुरु पर आँखें जमाता है और मुँह घुमा लेता है)

मंडलानन्द —(**वंचक से**) कहो वंचक, प्रिंसपल का मामला निपटा या नहीं ?

वंचक —ढनमनिया गुरु सब जगह टाँग अड़ाये रहते हैं। कोई मामला निपटे तो कैसे निपटे ?

ढनमनिया —(**व्यंग के स्वर में**) ढनमनिया गुरु टाँग अड़ाये रहते हैं ! अरे छात्रों में घुसकर उनको समझाया न होता, तो इस्तीफा देकर ही प्रिंसपल को जान बचानी पड़ती।

वंचक —(**झिड़क कर**) समझाया क्या खाक ! छात्रों ने हमें कमजोर समझ लिया है। अब वह 'डिक्टेट' कर रहे हैं।

ढनमनिया —'डिक्टेट' क्या करेंगे। प्रिंसपल जरा खेद प्रकट कर देंगे और मामला (**चुटकी बजाते हुए**) यों निपट जायगा।

वंचक —हाँ, प्रिंसिपल से खेद प्रकट कराइये। 'डिसीप्लीन' यों ही तीन-तेरह है। फिर पूरी भाड़ में चली जायगी।

ढनमनिया —(**आत्म-विश्वास की मुद्रा में**) कहीं कुछ नहीं होगा। सब ठीक हो जायगा।

मंडलानन्द —(**ढनमनिया से**) जल्दी खत्म कराओ मामला। ३-४ सौ छात्रों को भी असन्तुष्ट नहीं रखा जा सकता है। सब जुलुम कर देंगे।

बलबल सिंह—(**वंचक से**) आप इन सब मामलों के लिए बिलकुल 'अनफिट' हैं।

(ढनमनिया गुरु मुस्कुराकर वंचक को ओर देखते हैं। वंचक का मुँह उतर जाता है)

ढनमनिया —नहीं-नहीं, वंचक जी के विना काम नहीं चलेगा। प्रिंसपल को समझाने का काम इनके आलावा कोई नहीं कर सकता है।

वंचक —(**ढनमनिया से**) मैं इस झंझट में नहीं पड़ता। आप ही निपटायें !

ढनमनिया —(**मंडलानन्द की ओर देखकर**) निपटाने को तो मैं निपटा सकता हूँ लेकिन प्रबन्ध-समिति में तो वंचक जी हैं। वह अधिक सुविधा से बात कर सकते हैं। मेरे जाने से छात्र शायद भड़क जाँय। हाँ, प्रिंसपल साहब मुझसे मिल लें तो रास्ता शायद निकल आये।

बलबल सिंह—तुम लोग फालतू का बखेड़ा लेकर भिड़े रहते हो। अरे मामला निपटाना है। किसी तरह निपटाना चाहिये। झकझक कैसी ! (**मंडलानन्द की ओर देखकर**) कल का प्रोग्राम ठीक है न ?

मंडलानन्द —(**खीजकर**) देखूँगा। समय निकालना होगा। यहाँ साँस लेने को भी फुर्सत नहीं मिलती।

बलबल सिंह—(**बाँह झटकारकर**) फुर्सत-वुर्सत नहीं चलेगी। न जाने से सब मामला गड़बड़ा जायगा।

मंडलानन्द —(**इतमिनान से**) कोई इंतजाम होगा।

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) कल तो जाना मुश्किल होगा।

बलबल सिंह—(**बिगड़कर**) तुम, मुँह बन्द रखो गुरु।

ढनमनिया —(**स्वाभाविक मुद्रा में**) अरे भाई, प्रोग्राम पहले से ही फिट है।

बलबल सिंह—(**उत्तेजित होकर**) ऐसी की तैसी प्रोग्राम की। कल चलना ही होगा।

ढनमनिया —अरे जायँगे कैसे? पहले सुबह छतरपुर जाना है। वहाँ से गंगापुर और गंगापुर से खोखरपुर। खोखरपुर से विगड़ैलपुरवा और वहाँ से झंझटगंज......।

वलवल सिंह—(**तेज आवाज में झझककर**) किस बेवकूफ ने प्रोग्राम बनाया है? विना पूछे-जाँचे प्रोग्राम वना लेते हैं। सव कैंसिल करना होगा।

(**ढनमनिया गुरु वंचक की ओर देखकर मुस्कराते हैं**)

वंचक —(**रोष में**) प्रोग्राम कैंसिल नहीं हो सकता। सव इन्तजाम हो गया है। पैसा लगा चुका है।

ढनमनिया —जरूर मुश्किल काम है। वंचक जी ने मेहनत से चंदा इकट्ठा किया। शायद पूरे दो हजार खर्च कर चुके हैं। (**वंचक की ओर देखकर**) कहो वंचक जी?

मंडलानन्द —(**वंचक से**) हिसाब भी कोई रख रहा है?

ढनमनिया —वंचक जी खुद हिसाव रख रहे हैं।

वंचक —(**रोष भरे स्वर में**) मैं नहीं जानता हिसाव-किताव। ढकारू बाबू जानते होंगे।

ढनमनिया —ऐं! लेकिन ढकारू बाबू तो कहते थे कि चंदे का हिसाब वंचक जी के पास है।

वंचक —(**ढनमनिया से**) आप से कहा होगा। मुझसे तो ढकारू बाबू ने कहा था कि ढनमनिया गुरु से समझ कर हिसाव ठीक कर लेंगे।

ढनमनिया —(तुनुककर) मुझसे क्या मतलव! पाँच सौ रुपये का हिसाव था, सो दे दिया। ३८५ रुपये ७५ पैसे टैक्सी का किराया था। १०५ रुपये

जलपान-भोजन में लगे। बाकी नगद याने दस रुपये में ५ रुपये का फाउण्टनपेन और पौने दो रुपये की स्याही। मेरे पास हिसाब क्या है ?

वंचक —(**गरम होकर**) मेरे ही पास कौन-सा हिसाब रखा है। एक हजार तीन सौ तिरसठ रुपये मिले। रसीदें अभी काटी नहीं है। कल हिसाब मिलाया था। अट्ठारह सौ छानबे रुपये खर्च हो चुके हैं।

बलबल सिंह—यह बहुत टेढ़ा मामला है। तीन हजार मंडलानन्द जी से ले गया था। एक पैसा नहीं बचा। हिसाब कोई देना नहीं चाहता। आज सुबह पाँच सौ रुपये लेकर निकला था। रेवड़ी की तरह बट गये। अभी टैक्सी वाले का बिल बाकी है। (**मंडलानन्द की ओर देखकर**) रुपये का जुगाड़ किये बगैर गाड़ी आगे बढ़ेगी नहीं।

मंडलानन्द —(**झल्लाकर**) मैं तो तंग आ गया हूँ। यहाँ-वहाँ, सब जगह रुपये ही चाहिये। धेला कोई देवाल नहीं है। न जाने किस पाप का भार ढोना पड़ रहा है। यह चुनाव खत्म, तो पंचायत और जिला बोर्ड का चुनाव सिर पर। भगवान ही जाने। मेरी समझ में तो कुछ आता नहीं है।

ढनमनिया —सब इस तरह ही चलता है।

मंडलानन्द —(**ढनमनिया को गुरेरकर**) खाली बकवाद ! खर्च का हिसाब देना ही आता है या खर्च के लिए रुपये का जुगाड़ करना भी ?

वंचक —कमेटी मुश्किल से पाँच सौ भी नहीं जुटा सकी। ढनमनिया गुरु ने तो एक पैसा भी नहीं जुटाया।

ढनमनिया —वंचक जी, चार टका वसूल करके रोब मत छाँटो। दस-पाँच रोज खर्च कर देता हूँ, (**उठकर मंडलानन्द की ओर देखते हुए**) अच्छा, नमस्कार !

मंडलानन्द —(**ढनमनिया की ओर देखे बगैर**) जाओ, जान छोड़ो किसी तरह।

(**ढनमनिया गुरु एक कदम बढ़ते हैं। फिर घूमकर वंचक को तरेरते हैं और झटके से चले जाते हैं**)

वंचक —(**मंडलानन्द से**) दो घंटे के बाद ही प्रोग्राम देखना है। अभी आप ने भोजन भी नहीं किया।

बलबल सिंह—(**मंडलानन्द से**) मुझको कब समय दे रहे हैं ?

वंचक —कल तो 'पैक्ड' है। समय मिल नहीं सकता। असम्भव है।

बलबल सिंह—(**तैश में**) असम्भव-सम्भव मैं नहीं जानता। कल चलना ही होगा। (**मंडलानन्द की ओर देखकर**) आप सुबह चलिये।

वंचक —कैसे सम्भव होगा ? सुबह आपके साथ चले गये तो दोपहर को छतरपुर नहीं पहुँच सकेंगे।

बलबल सिंह—भाड़ में जाय छतरपुर। मुझसे कोई मतलब नहीं है।

मंडलानन्द —(**गुस्से में**) लेकिन मुझको तो मतलब है। गालियाँ मुझको मिलेंगी। आपका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है।

बलबल सिंह—'पालिटिक्स' में गाली के सिवा और क्या रखा है ? इससे डर कर पालिटिक्स में नहीं रहा जा सकता।

वंचक —हजारों लोग नाराज हो गये तब ?

बलबल सिंह—कोई नाराज-वाराज नहीं होता। सुबह मंडलानन्द जी मेरे साथ घूम आयेंगे। वहाँ सब फिट हो जायगा। घंटा-आध घंटा देर होने से कुछ बिगड़ेगा नहीं। ऐसे ही चलता है।

(मंडलानन्द की ओर देखकर सुनील खड़ा होकर नमस्कार करता है। मंडलानन्द मुस्कराकर अभिवादन स्वीकार करते हैं)

सुनील —अब आज्ञा दीजिये।

मंडलानन्द —जाओगे ?

सुनील —काफी देर हो गयी।

मंडलानन्द —देखा न, यहाँ दिन भर इसी तरह बकवाद चलती है।

सुनील —फिर सही।

मंडलानन्द —अच्छा !

(सुनील का गमन)

बलबल सिंह—(**मंडलानन्द से**) सुनील को भेजिये न मेरे क्षेत्र में। बड़ा अच्छा गोल बटोर रखा है।

मंडलानन्द —बक-बक के मारे किसी से बात भी कर पाता हूँ ? पहले दस जगह टेलीफोन किया तो पता चला नहीं। किसी तरह आये तो घंटा भर बैठे रहे और मेरा ध्यान नहीं गया। क्या कहा जाय, क्या सुना जाय !

वंचक —ऐंठ न हो तो सुनील बाबू बेजोड़ हो जाँय।

बलबल सिंह—अरे यार, जिसको कुछ देना-लेना नहीं, वह क्यों

परवाह करे। हमें गरज है तो काम निकालना चाहिये।

वंचक —काम निकालने के लिए ही तो बुलाया था लेकिन......

बलबल सिंह—(तेज आवाज में) बुलाया था तो बात करने का मौका देना चाहिए था। अर्र-पर्र न लगाये रहते तो बात होती न ?

वंचक —(चिढ़कर) अर्र-पर्र क्या मैं ही करता था ?

बलबल सिंह—नहीं मैं करता था। उम्मीदवार क्या हो गया हूँ, पाप घहरा पड़ा है।

वंचक —आपने क्यों नहीं रोक लिया ?

बलबल सिंह—मुझको 'भतरो मीठ, पुतरो मीठ' वाला हिसाब न बैठाना होता, तो रोक लेता। 'मूडी' आदमी है, इसलिए चुप रह गया।

वंचक —यही हिसाब तो सबको बैठाना चाहिये। सुनील बाबू यह नहीं......।

बलबल सिंह—बात ठीक कहते हो। कनवा को देखा न ? वेजीटेबुल में ब्लैक मार्केटिंग करके रकम चीर ली। पकड़ा गया तो रिरियाने लगा। क्या किया जाय। वक्त पर हजार-पाँच सौ गिन देता है। कमबख्त को बचाना ही पड़ा।

वंचक —यह सब किये बगैर कुछ चलता भी नहीं। कल पुलिस कप्तान से बहुत झकझक करनी पड़ी। पनारू को पकड़ लिया था। कातिल है, गुंडा है लेकिन काम आता है। साथ रखना पड़ता है।

आजकल गुंडई पर भी तैयार न रहे, तो राज-नीति चल नहीं सकती है।

बलबल सिंह—(**चौंककर**) अरे हाँ, खूब ध्यान करा दिया। (**मंडलानन्द से**) लट्टू पंडित डकैती में फँस गये हैं। जमानत नहीं हो रही है। जमानत पर छूट जाय तो मुकदमा खुद देख लेगा। अपने इलाके में बड़ा दबदबा रखता है। खड़ा हो जायगा तो एक वोट इधर से उधर नहीं हो पायेगा।

मंडलानन्द —(**तिलमिलाकर**) हो चाहे, न हो। यह सब नहीं होगा। करते रहिये आप लोग गुंडे-बदमाशों की पैरवी।

बलबल सिंह—अरे, आप भूल गये ! पिछली बार आपके इलाके में चुनाव के समय जालिम सिंह ने कमाल कर दिया था। वह न होता तो पूरा पोलिंग स्टेशन खिलाफ लुढ़क जाता। आपने आड़े समय में उसकी मदद की थी। वह भी आड़े समय में काम आ गया।

वंचक —(**उत्साहित होकर**) सचमुच, जालिम सिंह ने कमाल कर दिया था। पट्ठा भरी पिस्तौल लिये घूमता रहा। कोई दाँयें-बाँये नहीं हो सका।

मंडलानन्द —(**छत की ओर देखते रहकर सोचते हुए**) कहाँ हैं आजकल जालिम सिंह ? इधर दिखाई नहीं दिया। कुछ काम तो उससे लेना ही होगा।

वंचक —आया तो था कल। मैंने ही उसको छटका दिया। फिर चक्कर में फँसा है। खलिहान फूँकने वालों

में ठाकुर ने उसका भी नाम लिखा दिया था। पुलिस पीछे पड़ी है। भागा-भागा फिर रहा है।

मंडलानन्द —ठाकुर को बड़ी पीड़ा हुई है क्या? जिंदगी भर तो किसानों का खलिहान ही फूँकते रहे। इस बार चाचा मिल गया है। पता चल जायगा बच्चू को।

वंचक —इस समय ठाकुर को मिलाया जा सकता है। हजार-दो हजार खर्च कर देगा।

बलबल सिंह—तब जालिम सिंह दुश्मन हो जायगा।

वंचक —दोनों में समझौता करा दिया जाय तो मामला फिट बैठ जायगा।

मंडलानन्द —समझौता कैसे होगा? (**उत्सुकता प्रकट करते हैं**)

वंचक —अरे, मामूली बात है। जालिम सिंह को पुलिस का भय है। ठाकुर को पुलिस सूत्रों से यह खबर पहुँचवा दी जाय कि तुमने गलत रिपोर्ट लिखाई है, अतः तुम्हारे खिलाफ कार्रवाई हो सकती है, तो ठाकुर कब्जे में आ जायगा।

मंडलानन्द —(**खीज कर**) जाल-बट्टा! बस यही रह गया है। राजनीति है या गंदगी का ढेर!

वंचक —कोशिश की जा सकती है। मुसीबत यह है कि ढनमनिया गुरु सब जगह अपनी टांग अड़ा देते हैं।

बलबल सिंह—अरे, उनके खर्च-पानी का इंतजाम भी तो होना चाहिये। कैसा बुर्राक कपड़ा झारे रहते हैं। यहाँ खाने को नहीं अटता। तीन महीने के बाद सिल्क का एक कुर्ता बनवा सका हूँ।

वंचक —(**मंडलानन्द से**) समय हो रहा है ।

मंडलानन्द —(**बेमन से**) अच्छा, चला जाय ।

(मंडलानन्द के उठने के बाद वंचक और बलबल सिंह भी खड़े हो जाते हैं । तीनों का गमन । रंगमंच पर पूर्ण अंधकार)

● ड्राप ●

अंक : दो

(मध्यम वर्ग के परिवार का एक कमरा। रंगमंच के दक्षिण भाग पर पीछे की ओर एक टेबुल तिरछा पड़ा है। उसके पीछे कुर्सी है। मध्य भाग पर एक सोफा है और बायें भाग पर उससे मिलती-जुलती दो कुर्सियाँ रखी हैं। अरुण सोफे पर और सुनील एक कुर्सी पर बैठा नजर आता है)

अरुण —देख लिया न? कहता था कि आज की राजनीतिक हलचल तुम्हारे वश की नहीं है। माने नहीं। आने वाले कल के लिए आज से ही तकलीफ भोग रहे हो।

सुनील —(**टेबुल की ओर बढ़कर उसके कोने के भाग पर बैठते हुए**) कल भी बीत जायगा।

अरुण —(**सोफे से उठकर आगे बढ़ते हुए**) तुम तो बिता लोगे लेकिन बच्चे क्या करेंगे ?

सुनील —(**शून्य की ओर दृष्टि फेंककर**) यही चिन्ता है।

अरुण —(**सुनील की ओर घूमकर**) ईमानदारी, नैतिकता, आदर्श—इसका पाखंड ही यह चिंता ले आयी हैं सुनील !

सुनील —(**चौंकते हुए खड़े होकर**) अरुण...... !

अरुण —(**बीच में रोककर**) जिस युग में पैसा और सिर्फ पैसा ही ईमान, धर्म, आदर्श—सब कुछ हो गया

हो, उस युग में तुम्हारे ऐसे दो-चार बेवकूफ अपनी हड्डियाँ गलाते ही जाँय तो भी होगा क्या ?

सुनील —(**एक कदम आगे बढ़ते हुए**) लेकिन अरुण......

अरुण —(**आगे बढ़कर उसके दायें कन्धे पर अपना बायाँ हाथ रखते हुए**) यह लेकिन बहुत बार सुन चुका हूँ सुनील ! वह बेदम है—मुर्दा। वह फरेब के अलावा कुछ नहीं है। (**सुनील के कंधे से हाथ हटाकर विपरीत दिशा में आगे बढ़ते हुए**) लीडर को पैसा चाहिये। लीडर के साथ चल सकने वाले को पैसा चाहिये। घर में पैसा चाहिये। बाहर पैसा चाहिये। हर कदम पर पैसा और सिर्फ पैसा पूछा जाता है। (**रुककर झटके के साथ सुनील की ओर घूमते हुए**) पैसा है तो इज्जत......

सुनील — (**अरुण के पास जाकर उसके बायें कंधे पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए**) तुम साहस कायम रखने में मददगार नहीं हो सकते, तो उसको गिराने का तुम्हें कोई हक नहीं है।

(**अरुण जोर से हँसता है और आगे बढ़ते हुए सोफे पर बैठ जाता है**)

अरुण —यह हक की बात आज की दुनिया में या तो फरेब है या भ्रम ! नेता हक की बात दूसरों की आँखों में धूल झोंकने के लिए कहते हैं। तुम्हारे ऐसे बेवकूफ नाम लेते हैं हक का लेकिन दरअसल खुद को धोखा देते हैं।

सुनील —स्वार्थपरता की आँधी के विपरीत चलने वाला हर व्यक्ति हर युग में बेवकूफ ही समझा गया है।

अरुण —(झटके से उठकर सुनील के पास पहुँचते हुए) मैं पूछता हूँ सुनील, जो मासूम तुम्हारे आश्रित हैं, उनकी जिन्दगी के साथ कसाई जैसा मजाक करने की राह पर वढ़ते हुए तुम्हारे कदम किस नैतिकता की परिभाषा में आते हैं ?

सुनील —(रोष के स्वर में) और मैं पूछता हूँ कि हर आदमी तुम्हारी तरह ही सोचने लगे तो नैतिकता शब्द कहाँ रह जायगा ? कमजोर, दुर्वल, प्रताड़ित और पीड़ित किस का सहारा लेकर अपना दुःख झेलेंगे ? कौन-सी सांत्वना उनमें आत्मवल पैदा करेगी ? किस से शक्ति प्राप्त कर वह जीवन से जूझ सकेंगे ?

अरुण —जिंदगी से जूझने वाले भी उनकी ही जय-जयकार करते हैं जिनके पास पैसा है, उनके दरवाजे की ही शोभा वढ़ाते हैं जिनके पास पैसा है, उनकी ही तरह वनना चाहते हैं जिनके पास पैसा है ।

सुनील —(घूमकर टेबुल के पास जाकर उसपर बैठ जाता है) वेकस की मजबूरी को अपना तर्क मत वनाओ अरुण ! आदमी का तेज छीनकर उसको मजबूत नहीं बनाया जा सकता है ।

अरुण —(सुनील की ओर घूमकर) पाखंड की रोशनी आदमी को सतेज नहीं बना सकती है । आदर्श के भ्रम ने कभीं जिन्दगी को रवानी नहीं हासिल करायी । वंचक, ढनमनिया गुरु, मंडलानन्द, वलवल सिंह, क्या यह सव स्वार्थ से नहीं चिपके हैं ?

सुनील —(अरुण पर आँखे गड़ाकर) तुम्हारा मतलव ?

अरुण —आदर्श पर ही चलना हो तो समझौतावादी नहीं

हुआ जा सकता है। तुम खुद को धोखा दे रहे हो, क्योंकि तुम उन के सहारे संघर्ष करना चाहते हो, जो तुम्हारा रास्ता पसन्द नहीं करते हैं, जो तुम्हारी ताकत से फ़ायदा उठा सकते हैं लेकिन जिनकी ताकत से तुम फायदा नहीं उठा सकते। वंचक को......

(वंचक का प्रवेश । अरुण सहसा चुप हो जाता है ।)

वंचक —कहो अरुण बाबू, गरीब को कैसे याद कर रहे थे !

सुनील —(**कुर्सी पर बैठने का संकेत वंचक को देते हुए**) कैसे राह भूल गये वंचक जी।

वंचक —(**उदासी जाहिर करते हुए कुर्सी पर बैठकर**) बड़ा गड़-बड़ हो गया सुनील बाबू। बड़ी भारी सभा थी। आप के न आने से रंग फीका पड़ गया। लोग टें-टें करके रह गये। कोई जमा नहीं।

अरुण —क्यों नहीं जमा ? आप की गोल में सब नेता ही नेता तो हैं वंचक जी।

वंचक —छोड़ो अरुण बाबू, किसी में कोई दम नहीं है।

अरुण —दम भी नहीं है और पूछ भी इनकी है ! है न यही बात ?

सुनील —समय का रंग है यह।

अरुण —(**सुनील से**) और यह रंग कायम रखने में आप भी मददगार हैं।

सुनील —(**मुस्कुराकर**) बड़ा 'स्वीपिंग रिमार्क' है।

अरुण —(**सुनील पर नजर गड़ाकर**) गलत है क्या ?

वंचक —(**सुनील से**) मंडलानन्दजी पूछ रहे थे। चलेंगे अभी ?

अरुण —जरूर पूछ रहे होंगे। उस दिन भी पूछ रहे थे। सुनील गया। काफी देर तक बेवकूफ की तरह बैठा रहा, फिर लौट आया।

वंचक —(अरुण से) मंडलानन्दजी को बड़ा अफसोस है।

अरुण —अफसोस जाहिर कर दिया जाय, थोड़ी तारीफ कर दी जाय, काम लेना हो तो थोड़ा उछाल दिया जाय। यही तो ?

वंचक —नहीं-नहीं अरुण बाबू, सब सुनील बाबू की इज्जत करते हैं।

अरुण —(**दोनों बाजुओं को सोफे की पीठ पर फैला कर छत की ओर ताकते हुए**) आधी बात क्यों कहते हैं ? यह भी कहिये न कि काम लेना हो तो सिर पर चढ़ा लेते हैं। इसका समय निकल जाता है, तो दूध की मक्खी से कुछ अधिक मानने का समय नहीं मिलता है।

वंचक —सुनील बाबू खुद ही दिलचस्पी नहीं लेते हैं।

अरुण —यही तो इनकी गलती है। हाजिरी नहीं बजाते हैं, खुशामद नहीं करते हैं, हाँ में हाँ नहीं मिलाते हैं, हाथ पसारे खड़े नहीं रहते हैं याने......

सुनील —(**खड़े होकर**) अरुण......

अरुण —(**बाँहे बटोर कर हाथ बाँधते हुए घुटनों के बीच रखकर सुनील की ओर देखने के बाद**) अरुण तुम्हारी तरह बेवकूफ नहीं है। कुछ न करने वाले यदि सब कुछ पाने के हकदार हो सकते हैं, तो अरुण कुछ करके कुछ पाने का अधिकारी खुद को समझ ही सकता है।

सुनील —(टेबुल पर बैठकर) सौदेबाजी मुझको पसन्द नहीं है।

अरुण —जगह-जगह शोषण के विरोध में चिल्लाना और खुद बेजान रहकर शोषण का शिकार बनना मुझको भी पसंद नहीं है।

सुनील —निरर्थक बहस—

अरुण —(दायीं बाँह को सोफे की पीठ पर फैला कर सुनील की ओर घूमते हुए) जवाब दो। सिद्धांत के नाम पर तुम जिनके साथ हो, उन्होंने तुम्हारे श्रम, तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारी क्षमता का शोषण किया है या नहीं ?

सुनील —छीः, मैं प्रतिदान की बात नहीं सोचता।

अरुण —खूब ! अच्छा पलायन हैं। जिन्हें तुम स्वार्थी, निकम्मा, ब्लैक मार्केटियर समझते हो, जब उनके लिए वोट माँगने निकलते हो तो किसको धोखा देते हो ?

वंचक —(हत्बुद्धि-सा) मेरी समझ में नहीं आता कि यह झगड़ा किस बात पर है !

अरुण— (वंचक की ओर घूमकर) समझ में आयेगा भी नहीं वंचक जी। तुम्हारी समझ में आ सकती है, टैक्स चोर तिकड़म मल की बात, तुम्हारी समझ में आ सकती है दलाल शौकत की बात। तुम समझ सकते हो ढनमनिया गुरु—

(ढनमनिया गुरु का प्रवेश। नाम सुनकर ठिठकते हैं। फिर घूमकर वंचक की ओर देखते हैं और मुँह बिचका कर अरुण के पास सोफे पर बैठ जाते हैं।)

ढनमनिया —मेरा नाम क्यों लिया जा रहा था ? मैंने क्या गुस्ताखी की है ? (**वंचक की ओर देखकर शान से**) वंचक जी, तिकड़म मल का मामला फिट वैठ गया।

अरुण —(**व्यंग पूर्वक**) यह बात तो आपकी समझ में आ गयी होगी वंचक जी।

ढनमनिया —अरे वंचक जी नहीं समझेंगे ! दिन में तेरह तरह के पापड़ वेलते हैं और कुरुख होते हैं इस गरीव पर।

अरुण —(**ढनमनिया गुरु से**) आपकी तरह सब गरीव हो जायँ तो इस देश का बेड़ा पार हो जाय।

ढनमनिया —फिलासफी फिर। इस समय गला चटक रहा है। कुछ शर्वत-पानी होगा सुनील वावू ?

अरुण —(**छत की ओर देखकर**) तिकड़म मल हत्थे नहीं चढ़ा क्या ?

ढनमनिया —मारो मरकट को। वनिया नम्वर एक है। गया रिक्शा पर। ले आया पैदल। सवार सिर पर हो गया था सबेरे-सबेरे।

अरुण —धन्य है, धन्य हैं ढनमनिया गुरु। मामला कितने में फरियाया ?

ढनमनिया —(**अभिनय की मुद्रा में**) ऐसा-वैसा मामला था क्या ! शुद्ध चोरी। चोरी भी सैकड़ों की नहीं, हजारों की। भाग्य अच्छा था जो लह गयी। वरना ऐसा गच्चा खाते कि......

सुनील —गच्चा खाते तो अच्छा था। सवक तो मिल जाता।

ढनमनिया —सुनील बाबू, राजनीति कृष्ण जी की। धर्मराज ने तो लोढ़ा घुमा दिया था। पार्टी को चंदा-वंदा देता आया है। निकल आया है तो कुछ देगा ही।

अरुण —(ढनमनिया की जांघ पर हाथ पटकते हुए) यह बताओ गुरु, दे कितना चुका है ?

ढनमनिया —(मुस्करा कर अरुण को देखने के बाद) कमजोर नस मत दबाया करो अरुण बाबू !

अरुण —फिर भी गुरु......!

ढनमनिया —देगा क्या ? समझो, दो हजार में मामला निपट गया।

वंचक —(अरुण की ओर देखकर) तब तो ठंढई-पानी का चकाचक डौल बैठ गया।

ढनमनिया —(उपेक्षा के भाव से) सावन के अंधे को हरियाली ही नजर आती है। तिकड़म मल पायें, तो आदमी को बेचकर खा जाँय।

अरुण —(सोफे पर दोनों बाँहें फैला कर इतमिनान से) तुम्हारी देश-सेवा पसंद है गुरु !

ढनमनिया —अरे राजनीति है अरुण बाबू, राजनीति। साधु बने, तो मोर्चा के मोची। देखो न सुनील बाबू को। मनुसपिलिटी में दो-दो रुपये घूस लेने वाले मिनिस्टर हो गये और यह चप्पल ही फटकार रहे हैं। अरे, सचाई का माने यह कहाँ है कि मेहनत भी करो और धोबी भी बने रहो।

अरुण —(सुनील की ओर देखकर) क्या खयाल है सुनील ?

सुनील —(मुस्करा कर) राम मिलायी जोड़ी। बैठक बाजी में गुरु तुमसे भी आगे हैं।

ढनमनिया —बैठक बाजी नहीं, सच बात कहता हूँ सुनील बाबू ! वह भ्फाँईदास है न ? अरे वही जो इनकम टैक्स के दफ्तर में दलाली करता था। कैसा दाँव मारा उसने। खट् से मिनिस्टर हो गया पट्ठा।

वंचक— बड़ा चालू है। कभीं 'नहीं' तो कहा ही नहीं।

ढनमनिया —बुद्धि नहीं होती तो सबको चूना लगा देता ?

अरुण —(**ढनमनिया से**) तो गुरु, चूना लगाने का नाम ही बुद्धि है न ?

ढनमनिया —और क्या ! यहीं देखो न ! अटकती है तो सुनील बाबू, सुनील बाबू ! अपनी गोटी के लाल हो जाने पर सुनील बाबू ठेंगे पर। सुनील बाबू हैं बछिया के ताऊ। अपनी ताकत सब जगह लगा देते हैं। खुद ताकत की जरूरत महसूस करते हैं तो सब बाबा जी नजर आते हैं।

सुनील —अच्छा गुरु, लेक्चर बन्द करो। यह बताओ कैसे आ टपके ?

ढनमनिया —भाई, 'भूखे भजन न हों ही गोपाला' तिकड़म मल के बच्चे ने मार डाला। शरबत-पानी कुछ नहीं। आपसे बढ़िया पुछवैय्या कौन है ! इधर आया ही, तो आ गया। फिर, मंडलानन्द जी का एक पत्र भी देना था।

(ढ़नमनिया गुरु इधर-उधर जेब में हाथ डालते हैं। जेब उलटते हैं। कई नोट जेब से निकल कर गिर पड़ते हैं। ढनमनिया गुरु दनादन उन्हें समेटने लगते हैं। सुनील और अरुण मुस्कराते हैं)

वंचक —(व्यंग के स्वर में) लम्बा हाथ मारा है गुरु ने !

ढनमनिया —(मुँह बिचका कर) लगी नजर। हुआ सब चौपट।

अरुण —तुम चौचक गुरु !

ढनमनिया —(नोट सम्हालकर फेंटा कसते हुए) हाँ सुशील बाबू, आने दो कुछ शर्बत-पानी।

अरुण —शर्बत-पानी का डौल नहीं है गुरु। भाभी बीमार है। सुनील है घर में कैद। घर में भूजी भाँग नहीं है। सब देश-सेवा को अर्पण। फिर भी, खबर तक लेने वाला कोई नहीं। काम लेने वाले डेढ़ दर्जन तो मेरे सामने आ चुके हैं।

वंचक —(आश्चर्य की मुद्रा में) सुनील बाबू ने तो कुछ कहा नहीं।

अरुण —(व्यंग के स्वर में) यही तो बेवकूफी है। डुग्गी लेकर ऐलान करना चाहिये था।

सुनील —जली-कटी सुनाना बंद भी करोगे या नहीं ?

अरुण —(उपेक्षा भाव से) माल मारे गाजी मियां, मार खाये जुलाहा। (ढनमनिया का हाथ पकड़ कर) मामूली तबकें के जरूरतमंद सब सुनील बाबू के पास; क्योंकि सुनील बाबू के पास आसानी से पहुँचा जा सकता है। बड़े नहीं हैं, अतः रात के बारह बजे भी दरवाजा खटखटाया जा सकता है। बड़े लोगों के पास बड़े लोगों की पहुँच लेकिन मजा मारते हैं बड़े लोग ही।

सुनील —(खीजकर खड़े होते हुए) ओफ्, तुम्हारे सर पर तो आज भूत सवार हो गया है अरुण।

अरुण —(**ढनमनिया से**) सुनील बाबू को कहीं जाना हो तो रिक्सा-भाड़ा पल्ले से दें। चूके तो मारे गये। काम हो गया तो दो-चार वार वाह्-वाह। वरना सारे शहर में चौराई वट जाती है—अरे मारो, सुनील भी कोई आदमी है। रोलेक्स के मामले में फँस गये थे, जमानत तक के लिए पुलिस से कहा नहीं।

ढनमनिया— (**आँखें फैलाकर**) यह तो है। कल पनरुआ कह रहा था—गुरु छान ले ले रहली। वावू कहलन सुनील भैया से लेकिन मदद नाहीं मिलऽल।

अरुण —अरे गुरु, सेठ लोटनदास की जमीन मारी जा रही थी। था अन्याय इसलिये सुनील वाबू भिड़ गये। उस समय सेठ रात-दिन मोटर लेकर हाजिर रहता था। सुनील ने जमीन बचा दी। काम निकल गया। सुनील जव एक गरीव की लड़की के लिए सहायता लेने गया, तो सेठ मंदी का रोना रोने लगे। बेटा कोठी पर कोठी वनवाता जा रहा है, फिर भी मंदी का रोना !

ढनमनिया —असली बात वताऊँ अरुण वाबू। युग है उल्लू वनाने का। जो चूका सो मारा गया। सिद्धांत और त्याग का युग गया।

अरुण —(**सुनील के पास जाकर**) आदर्श समाज में ढल नहीं पाता तो वह भ्रम हो जाता है सुनील। तब आदर्शवादी या तो निराशा का शिकार होता है या वालू से तेल निकालने की कोशिश करते-करते मर जाता है।

सुनील —(**मुस्करा कर**) तुम्हारी फिलासफी न तो मैं समझ सका हूँ अरुण, न समझ सकता हूँ।

ढनमनिया —भई, बहस सुनते-सुनते नींद आने लगी है (**जम्हाई लेकर**) मजा नहीं आ रहा। मैं तो सीधी बात जानता हूँ, 'जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी कीजे।'

सुनील —(**हँसते हुए**) अवसरवाद को भी जीना चाहिए न गुरु।

ढनमनिया —अवसरवादी कहो सुनील बाबू, चाहे बकवादी। मैं जमाने का दस्तूर कबूल करता हूँ, तुम नहीं। इतना ही तो फर्क है। अच्छा, मारो गोली हुज्जत को। (**वंचक से**) कहो वंचक जी, शौकत मियां का मामला फरियाया या नहीं ?

वंचक —(**तनकर**) क्या फरियायेगा ? अपनी ही गाता है। बलबल सिंह की अटकी है, वरना मैं ऐसे चमगादड़ से बात भी नहीं करता। बहुत चालू है। टेहुँजा भिड़ाना और रकम चीरना, यही उसका काम है। उल्लू बनाता है हम लोगों को।

ढनमनिया —उल्लू बनते हैं उल्लू वंचक जी !

अरुण —ए गुरु······

(**ढनमनिया आँखें फाड़कर अरुण को देखता है**)

अरुण —(**मुस्करा कर**) जबान पर लगाम तो रखो गुरु !

(**ढनमनिया दोनों हाथों से दोनों कान पकड़ता है**)

वंचक —(**तिलमिला कर**) ठठेरा-ठठेरा बदलौवल हो भी कैसे सकती है गुरु !

ढनमनिया —(**तड़प कर**) क्या मतलब ?

वंचक— —तुम उल्लू, वनाते हो जमाने को। तुमको कौन वनायेगा !

ढनमनिया —ए वंचक, दिमाग खराव हो गया है क्या ?

वंचक —(**रोष में**) अपना दिमाग सम्हालो गुरु ! यहाँ झाँसा-पट्टी काम नहीं देगी। रोव जमाओ तिकड़म मल पर। यहाँ गुर्रा-गुर्री करना मत।

ढनमनिया —(**वंचक से**) जिंदगी वीत गयी दलाली करते। अव चले हो......

अरुण —अरे देशभक्तों, जूझने की तैयारी कर रहे हो क्या ?

ढनमनिया —(**वंचक से**) कितनों को रद्दा देकर अखाड़े से निकाल दिया। वंचक को क्या समझता हूँ।

वंचक —(**खड़े होकर जोश में**) जवान सम्भालो गुरु, नहीं तो ऐसा दुर्गाघाटी.........

ढनमनिया —(**खड़े होकर आस्तीन चढ़ाते हुए**) मंडलानन्द का घर समझ रखा है क्या वे ?

वंचक —(**आगे बढ़कर मुक्का चलाते हुए**) धत् तेरे गुरु की...

(**ढनमनिया पीछे हटकर वार बचा लेता है और पट घुसकर वंचक को पटकने के बाद सीने पर सवार होकर मुक्का तानता है**)

ढनमनिया —एक रद्दा.........

(**अरुण और सुनील झपटकर दोनों को अलग-अलग कर देते हैं**)

सुनील —अरे भाई, घर है। अखाड़ा नहीं है।

वंचक —(**ढनमनिया को तरेरते हुए**) अच्छा गुरु, फिर भेंट होगी।

ढनमनिया —(**आस्तीन ठीक करते हुए**) भेंट के चक्कर में मत रहना वंचक। तबियत हो, तो चलो बाहर। अभी फरिया जाय।

अरुण —(**दोनों के बीच खड़ा होकर**) महान् देशभक्त, परम जन-सेवकों। शांत हो जाओ। तुम्हारा नाटक देखकर दर्शक हँसे बिना रह नहीं सकते।

सुनील —(**ढनमनिया और वंचक को अलग-अलग बैठाते हुए**) अजीब हाल है। लड़ना शुरू करेंगे तो लगेगा कि एक-दूसरे का खून पी जायँगे।

ढनमनिया —(**सुनील से**) नहीं सुनील बाबू, कई बार समझाया कि टिर्राया मत करो लेकिन......

अरुण —(**ढनमनिया की ओर घूमकर**) यह टिर्राया क्या है गुरु?

ढनमनिया —अरे वही, कम कूवत लात खाने की निशानी।

वंचक —(**गुस्से में**) हेकड़ी बाज की मरता नानी नहीं?

ढनमनिया —(**इतमिनान से**) मरेगी-मरेगी। नानी भी मरेगी। ऐसा कच्चा खाओगे कि टेंटीपन भूल जायगा।

सुनील —(**क्षुब्ध होकर**) बन्द करो यह बकबक। (**ढनमनिया की ओर घूमकर**) कहो गुरु, कहीं जाना भी या नहीं?

ढनमनिया —(**वंचक की ओर संकेत कर**) बलबल सिंह से गुल्ली सम्भालते हैं। इनसे कहो, यहाँ से गोल हो जाँय।

सुनील —(**ढनमनिया को डपटकर**) मेरे घर पर किसी का अपमान करना बेजा है।

ढनमनिया —(**कान पकड़कर**) अब नहीं करूँगा। वर मरे चाहे कन्या।

अरुण —(**ढनमनिया से**) तुमको दक्षिणा से काम !

(**अरुण और ढनमनिया गुरु हँसते हैं**)

अरुण —(**ढनमनिया से**) अपने राजनीतिक दल भी चिड़िया घर हैं गुरु !

ढनमनिया —बिलकुल चिड़िया घर अरुण बाबू ! ऐसे-ऐसे चंडूल भरे हैं कि......

सुनील —(**बीच में**) अच्छा ढनमनिया गुरु, अब मेरा पिंड छोड़ो और अपना रास्ता नापो ।

ढनमनिया —(**खड़े होकर**) ठीक है, शाम को सभा में आओगे न सुनील बाबू ?

वंचक —(**झटके से उठकर**) बलबल सिंह की सभा में चलना है सुनील बाबू ।

ढनमनिया —(**सुनील के पास पहुँचकर इतमिनान से**) अपने राम ने तो ऐलान कर दिया है कि सुनील बाबू का जोरदार भाषण होगा ।

वंचक —(**झपटकर सुनील के पास पहुँचे हुए**) बलबल सिंह की सभा में मुख्य वक्ता आप ही हैं ।

(**अरुण आगे बढ़कर ढनमनिया और वंचक को दूर-दूर कर देता है**)

अरुण —दूर-दूर भाई । आग-पेट्रोल एक साथ नहीं ।

ढनमनिया —(**अरुण को उपेक्षा कर सुनील की ओर देखते हुए**) अपने क्षेत्र में सभा है, नाक नहीं कटना चाहिये ।

वंचक —बलबल सिंह के क्षेत्र में मुकाबला कड़ा है सुनील बाबू !

(**अरुण, ढनमनिया को सोफा और वंचक को कुर्सी पर बैठा देता है**)

अरुण —सुनील एक। हुक्म दो जगह एक साथ हाजिर होने का। इस असम्भव को सम्भव बनाने का उपाय एक ही है कि सुनील कहीं न जाय।

ढनमनिया —(**अरुण को खींचकर अपने पास बैठाते हुए**) बस, अब क्या कहूँ कि आप क्या हैं अरुण बाबू! अरे दो जगह क्या, सुनील बाबू को दस जगह जाना होगा।

अरुण —अपना पसीना बहाना होगा और भोजन भट्टों की जीत का रास्ता साफ करना होगा।

ढनमनिया —कहा तो था सुनील बाबू से कि जरा अपनी मंशा जाहिर कर दें लेकिन......

अरुण —(**सुनील की ओर संकेत कर**) यह, आप माँ-बाप हैं, कहने के लिए तैयार नहीं है। यह बताओ गुरु कि माँगने की ही चलन है तो गुण-अवगुण की बकवाद क्यों की जाती है?

ढनमनिया —(**अरुण का कंधा थपथपाकर**) नहीं समझोगे, नहीं समझोगे अरुण बाबू। राजनीति छोकरों का खेल नहीं है। जो घुसकर तमाशा देखे, वही मीर।

सुनील —(**ढनमनिया को हाथ जोड़ कर**) यह वेद-पुराण अब बन्द करो गुरु।

ढनमनिया —(**सुनील की ओर देखे बिना अरुण से**) उस दिन मंत्री जी आये थे। भाषण करके चले तो यार लोगों ने मोटर का रास्ता ही छेक लिया। मंत्री जी ने मोटर पर डटे-डटे ही दरबार लगा दिया। सुनील बाबू से मैंने कहा कि चलिये भेंट करा दूँ तो भड़क

उठे। अब बताओ अरुण बाबू, टिप्पस लगायें वगैर देश सेवा होती है क्या ?

अरुण —झटक दिया होगा तुमको सुनील ने गुरु ?

ढनमनिया —अरे वही बेसिर-पैर की बात। छिः आम लोगों का मनोबल गिराने का रवैया भी नेताओं से बन्द नहीं होता। जहाँ मौका मिलता है, दरबार लगा देते हैं। आदमी को अपने पर विश्वास कर सकने लायक छोड़ते ही नहीं।

अरुण —(**सुनील को ओर देखकर**) कैसा अपने पर विश्वास कर रहे हैं तुम्हारे सुनील बाबू !

ढनमनिया —नहीं-नहीं, ऐसा मत कहो अरुण बाबू ! (**सुनील की ओर संकेत कर**) बड़ा रंग है इनका। सबकी फूंक सरकती है।

अरुण —इस आत्मसंतोष ने सुनील को पाखंडी बना दिया है।

ढनमनिया —फिर वही रूखी-सूखी बातें ले बैठे अरुण बाबू।

अरुण —ठीक कहते हो गुरु ! इसमें क्या रखा है। हर्रे-फिटकरी के बिना रंग चोखा रखने का तुम्हारा तरीका मुझको पसंद है। खुद उल्लू बने रहने से कहीं बेहतर है दूसरों को उल्लू बनाते जाना।

ढनमनिया —(**अरुण का कंधा पकड़ कर**) तुम जानो कि यह भी कला है अरुण बाबू, कला। ढनमनिया गुरु लम्बी-चौड़ी हाँकते नहीं हैं और जहाँ हाँक सकते हैं, वहाँ चूकते भी नहीं हैं।

अरुण —रंग है तुम्हारा गुरु ! बाँधे जाओ।

ढनमनिया —आप समझो अरुण बाबू कि धोती के अंदर सब नंगे हैं। दिन में गांधी जी का नाम बघारेंगे, शाम को 'स्काच', नहीं तो 'जानीवाकर' छानकर मजा लेंगे। ढनमनिया गुरु ही क्यों चूकें। 'स्काच' न सही, ठंढई का जुगाड़ तो होना ही चाहिये।

वंचक —(**सुनील से**) सुनील बाबू, , तय रहा न ?

ढनमनिया —(**कमर से ऊपर का आधा भाग बैठे-बैठे आगे झुकाते हुए**) अरे, मैं तो भूल ही गया था। अपना नाक न कटने पाये सुनील बाबू। जरा इधर-उधर हुआ कि ढनमनिया गुरु का बाजा बजा।

वंचक —(**खीजकर**) टाँग अड़ाने की ही कसम खाकर आये हो क्या गुरु ?

ढनमनिया —(**इत्तमिनान से**) टाँग कहो या लग्घी। होगा वही जो मैं कहता हूँ। घर में चिराग जलाने के बाद ही मसजिद में चिराग जलाया जायगा। सुनील बाबू पहले अपना क्षेत्र देखेंगे या बलबल सिंह का।

वंचक —तो क्षेत्र भी बटा है गुरु ?

ढनमनिया —(**आगे लटक कर**) क्यों नहीं बटा है ? बलबल सिंह खुद नहीं टिरयिये रहे—मेरे क्षेत्र में दूसरे को टिकट मिलेगा कैसे ? फौजदारी हो जायगी और..... ।

वंचक —शुरु पार्टीबाजी......।

ढनमनिया —(**हुकूमत भरी आवाज में**) पिंगल मत पढ़ो वंचक। फुर्सत मिलने पर ही सुनील बाबू जाँयगे।

वंचक —मालुम पड़ता है, सुनील बाबू तुम्हारे पाकेट में हैं !

ढनमनिया --पाकेट में रहते होंगे वंचक। सुनील बाबू सबको ठेंगे पर समझते हैं।

वंचक —आज बहुत टेढ़ा बोल रहे हो गुरु......।

ढनमनिया —(लापरवाही से) हाँ, अभी तो बोल ही रहा हूँ।

वंचक —कुछ और भी कर सकते हो ?

ढनमनिया —(पूर्व की मुद्रा में) टेटुआ धरने के लिए मुझको ज्योतिषी से राय लेनी पड़ती है क्या ?

वंचक —अच्छा, देखा जायगा। (झटके से उठकर) चलता हूँ सुनील बाबू। (जाते-जाते) देखेंगे गुरु, तुम्हारी गुरुआई कैसे चलती है।

ढनमनिया —(तिरस्कार-भाव से) जा-जा, देख लेना।

(वंचक का गमन)

अरुण —(ढनमनिया से) बड़ा रगेद दिया गुरु।

ढनमनिया —अरे लपाड़िया है। दिन भर दलाली करता है और चाहता है ढनमनिया गुरु पर रंग बाँधना। रोज नोट हथियाता है बलबल सिंह से। खा न जाये उसको तो कहियेगा।

सुनील —(गम्भीर-भाव से) बात बेजा हैं गुरु। यहाँ यह सब नहीं होना चाहिये था।

ढनमनिया —भगवान के नामपर तुम तो रहम करो सुनील बाबू !

सुनील —(चिंतित-सा) नहीं-नहीं, यह सब मुझको पसन्द नहीं है।

अरुण —ऐसा चौचक चपेटा गुरु तुमने कि भाई को छठी का दूध याद आ गया होगा।

ढनमनिया —सो तो समझो अरुण बाबू कि यह सुनील बाबू का घर था कि मैं पट घुसकर ही रह गया। पार्टी का दफ्तर होता तो ऐसा धोबियापाट मारता कि बेटा कुछ दिन तक मालिश कराते रहते।

अरुण —हो रियाजी गुरु।

ढनमनिया —(**भुजा को हाथ से कसकर अरुण को दिखाते हुए**) बड़ा रियाज खाया है इसने।

सुनील —(**विरक्त-सा**) यह सब अच्छा नहीं हुआ।

ढनमनिया —वाहरे सुनील बाबू। अरे, सरबर उसने शुरु की थी या मैंने ? वह इसका ही पात्र है। बेटा, हर जगह तिकड़म करता है।

अरुण —(**मुस्कराते हुए ढनमनिया को देखकर**) कौन नहीं करता गुरु !

ढनमनिया —अं .....।

(ढनमनिया गुरु आँखें फाड़-फाड़ कर अरुण को देखते हैं। फिर मुस्कराते हैं। एक क्षण बाद अरुण और गुरु दोनों जोर से हंसने लगते हैं।)

● ड्राप ●

अंक : तीन

(सेठ की गद्दी। मध्य भाग पर गद्दी पर मसनद रखा है। सामने रोकड़ की पेटी है। सेठ जी पेटी पर दोनों बाहों के अग्र भाग को टिकाकर और रंगमंच के दक्षिण भाग पर रोकड़ की पेटी के कोने से लगभग सटकर तिकड़म गुरु बैठे नजर आते हैं)

तिकड़म मल—हालत बहुत खराब है ढनमनिया गुरु, कोई दूसरा रास्ता देखो।

ढनमनिया —वाह सेठ जी, आप ही ऐसा बोलेंगे तो अपनी गाड़ी चल चुकी।

तिकड़म मल—(**नाराजगी की मुद्रा में**) हम लोग टैक्स चोर और ब्लैक मार्केटियर हैं गुरु। हम क्या गाड़ी चलायेंगे किसी की ? अपने सुनील बाबू से बोलो।

(बलबल सिंह का प्रवेश। नमस्कार किये बिना धोती समेटते हुए गद्दी पर जमकर)

बलबल सिंह—भला मिले तो सेठ जी। आज यहाँ, कल वहाँ ! परसों बम्बई, नरसों कलकत्ता। बड़ा खटते हो सेठ जी !

ढनमनिया —हराम में रकम नहीं आती बाबू बलबल सिंह, खटना ही पड़ता है।

तिकड़म मल—(ढनमनिया की उपेक्षा कर के बलबल सिंह से) चुनाव में लुटिया कैसे डूब गयी ?

बलबल सिंह—(विरक्त-सा) अरे पूछो मत सेठ जी। सब धोखा ही धोखा रहा। मुझको तो नफरत हो गयी है।

तिकड़म मल—तो आप आगे चुनाव नहीं लड़ेंगे ?

बलबल सिंह—(हँस कर) यह कैसे होगा सेठ जी। जिन्दगी तो इसमें बीत गयी। चुनाव नहीं लड़ूँगा तो क्या शंख फूकूँगा !

तिकड़म मल—आप लड़िये चाहे न लड़िये। अब आपकी पार्टी में कोई दम नहीं रह गया।

बलबल सिंह—ठीक कहते हो सेठ जी। बड़ी चौपट हो गयी है।

ढनमनिया —चौपट तो हम लोगों ने ही किया।

तिकड़म मल—(ढनमनिया की ओर संकेत कर) आजकल गुरु का बाजार ठंडा है। बेचारे......।

बलबल सिंह—अरे गुरु मस्त हैं। पार्टी-फार्टी से इनको क्या। सिप्पा बैठता रहे तो......।

ढनमनिया —वाह, बाबू बलबल सिंह वाह ! लुटिया भी बोर दी और सिद्धान्त भी छाँट रहे हो। वंचक ऐसे चौपटानन्द के साथ रहने का ही फल है यह।

बलबल सिंह—(तिकड़म मल से) हाँ सेठ, लाइसेंस तो मिल गया न ?

तिकड़म मल—ऐसे ही मिल गया क्या ? रकम गल गयी।

बलबल सिंह—(लापरवाही से) गल गयी तो गल गयी। फिर आ जायेगी।

तिकड़म मल—(मजाक उड़ाते हुए) हाँ-हाँ, यहाँ तो पेड़ में फलती है रकम। जब चाहेंगे, तोड़ लेंगे।

बलबल सिंह—मजाक छोड़ो सेठ जी। इलेक्शन का कर्ज-वर्ज बाकी है। कुछ मुद्रा निकालो।

तिकड़म मल—(मुँह-फेरकर) मुद्रा कहाँ है यहाँ! यही ढनमनिया गुरु को समझा रहा था। आप तो समझ ही रहे होंगे कि......।

बलबल सिंह—(खुशामद के स्वर में) अरे, सेठ होकर ऐसी बात!

तिकड़म मल—कौन सेठ! हम तो चोर और ब्लैकमार्केटियर हैं।

ढनमनिया—सुनील बाबू की जबान पर तो लगाम है नहीं। कहीं कुछ कह दिया होगा, सेठ जी को चोट पहुँच गयी है।

बलबल सिंह—(अकड़ कर) धत्त् तेरे की! सुनीलवा भी कुछ है क्या। चार आदमी भी तो नहीं है उसके साथ।

तिकड़म मल—आप लोग तो हैं उसके साथ।

बलबल सिंह—मेरे ठेंगे पर। मैं कुछ नहीं समझता।

ढनमनिया—समझने के लिए वहाँ है भी क्या! सिद्धान्त छाँटते हैं, बस।

तिकड़म मल—(ढनमनिया से) सुनील के सामने ऐसे नहीं बोलोगे गुरु।

ढनमनिया—खूब कहा सेठ जी। अरे, ढनमनिया गुरु बोलना ही छोड़ दें तो खायेंगे किसके बाप का?

बलबल सिंह—बेवकूफ, वह क्या जाने पालिटिक्स!

ढनमनिया—'सौ-सौ जूता खाय तमाशा घुसकर देखे।' सुनील बाबू यह जानते हैं क्या?

बलबल सिंह—ऐसे आदमी को पार्टी से निकाल देना चाहिये।

ढनमनिया —ऐसे आदमी पार्टी में हैं ही कितने ? सब आप से आप निकलते जा रहे हैं !

वलबल सिंह—(**तिकड़म मल से**) बड़ा घमंडी है ।

ढनमनिया —टेंटी कहो, टेंटी बाबू वलवल सिंह । झुकना तो जानते ही नहीं सुनील बाबू !

तिकड़म मल—लगे न गुरु गुण गाने !

ढनमनिया —कैसा गुण ! लपे-झपे नहीं तो ठूँठ ! ढूँठ समझो सेठ जी ! (**ढनमनिया गुरु की भाषा में जरा बनारसी पुट रहता है**) ।

तिकड़म मल—अरे छोड़ो गुरु, सब पुट-वुट सुनील के सामने भूल जाता है तुम्हारा !

ढनमनिया —नहीं समझोगे—नहीं समझोगे सेठी जी ! असली वात की वात जानों तो समझो कि सुनील बाबू गुरु का प्रवचन सुनकर भर्रा हो जाते हैं ।

तिकड़म मल—छोड़ो गुरु, ऐसी रावलेवाजी बहुत देखी है ।

ढनमनिया —क्या मतलब ?

तिकड़म मल—सुनील के आगे तुम्हारी कुछ चलती नहीं ।

ढनमनिया —भया, वहाँ चलने का सवाल क्या है । मंगते मियाँ के दरवाजे पर दरवेश बनने का उल्लूपन मुझको आता नहीं सेठ जी !

(हठात् अन्दर से सुनील का आगमन । वह एक-एक कर ढनमनिया गुरु और बलबल सिंह को देखता है । दोनों हत्प्रभ नजर आते हैं । तिकड़म मल मुस्कराते हैं)

सुनील —(**तिकड़म मल से**) क्या कीजियेगा, यही है सच !

तिकड़म मल—(**मुस्कराकर ढनमनिया से**) चुप क्यों हो गये गुरु ?

ढनमनिया —चुप हो मेरी बला। तिकड़म नाम नहीं है तो क्या हुआ, मैं जानता भी नहीं ?

सुनील —क्या जानते हो गुरु ?

ढनमनिया —बाहर टैक्स चोर और ब्लैकमार्केटियर। घर में सेठ.........।

सुनील —(**मुस्कराकर**) अपना चेहरा किसको दिखाई देता है गुरु ?

ढनमनिया —अरे, गुरु हैं किसलिए ? आइना दिखाने का काम उसने सीख रहा है। (**जेब से आइना निकालकर सेठ तिकड़म मल की ओर बढ़ाते हुए**) देखो, है न सेठ जी आइना ?

बलबल सिंह—आप टैक्स चोर और ब्लैकमार्केटियर के घर क्या कर रहे थे सुनील बाबू ?

ढनमनिया —चाणक्य की मानो बाबू बलबल सिंह तो टीका लगाकर बाम्हन बनने में भी मजा है।

बलबल सिंह—(**सुनील को तरेर कर**) ऐसे रंगे सियार मैंने देखे हैं।

ढनमनिया —क्यों नहीं, क्यों नहीं। सिंहों के लहड़ें नहीं, हंसों की नहीं पाँति ! बाकी तो जगह-जगह हैं ही। देखेंगे नही कैसे आप बाबू बलबल सिंह !

सुनील —(**तिकड़म मल से**) अच्छा सेठ जी, मैं चला।

(**सुनील जाना चाहता है लेकिन सेठ रोक लेता है**)

तिकड़म मल—जाइये मत सुनील बाबू, यह बलबल सिंह और ढनमनिया गुरु का अपमान होगा।

सुनील —(**मुस्करा कर**) इनका सम्मान करने के लिए तो आप हैं ही ।

(**सुनील का गमन**)

तिकड़म मल—देख लिया सुनील बाबू को ?

बलबल सिंह—(**नथुने फुलाकर**) क्यों आये थे ?

ढनमनिया —(**आगे झुक कर**) अन्दर क्या कर रहे थे ?

तिकड़म मल—क्या करोगे जानकर गुरु !

बलबल सिंह—हवा के घोड़े पर ही सवार रहते हैं !

ढनमनिया —सेठ जी, सुनील बाबू के अन्दर से आने की बात कुछ ऐसी-वैसी लगती है ।

बलबल सिंह—चुप रहो गुरु ! इस सुनीलवा ने मूड एकदम खराब कर दिया है ।

ढनमनिया —तो पहले मूड ठीक कर लो आप ।

बलबल सिंह—ठीक क्या होगा, खाक ? अपशकुन की तरह आ टपके !

ढनमनिया —निराशावादी मत बनिये बाबू बलबल सिंह । आप आये हैं तो सेठ जी खातिर-वातिर करेंगे ही ।

(**अरुण का प्रवेश । वह हँसते हुए सबको नमस्कार करता है**)

अरुण —(**तिकड़म मल से**) सेठ जी, सुनील नहीं है क्या ?

तिकड़म मल—सुनील बाबू अभी-अभी चले गये ।

(**अरुण आगे बढ़ कर बैठ जाता है । बलबल सिंह नाँक-भौं सिकोड़ता है । ढनमनिया गुरु मुस्कराते हैं**)

अरुण —आज तो सुनील को आपने बुलाया था !

(ढनमनिया गुरु चौंकते हैं)

तिकड़म मल—(**परेशानी छिपाने की मुद्रा में**) बुलाया क्या था....।

अरुण —यों ही कह दिया था। नहीं-नहीं, कहला दिया था।

ढनमनिया —(**आश्चर्य की मुद्रा में तिकड़म मल से**) सुनील बाबू को आपने बुलाया था !

अरुण —(**ढनमनिया से**) अपनी कहो गुरु, तुम कैसे आये ?

तिकड़म मल—अरुण बाबू......... ।

अरुण —(**तिकड़म मल की उपेक्षा करते हुए बलबल सिंह की ओर देखकर**) और बलबल सिंह भी क्या यों ही आ गये हैं ?

(**बलबल सिंह और ढनमनिया एक साथ तिकड़म मल की ओर देखते हैं ।**)

ढनमनिया —बड़ा मजा है इस दुनिया में !

अरुण —हाँ, कभी-कभी बेवकूफ बनने में भी मजा आता है ।

बलबल सिंह—अपना मतलब कहिये जनाब, आप तो बिना बुलाये आये हैं न ?

अरुण —अपने राम तो तमाशबीन हैं बलबल सिंह जी। कुछ नहीं मिला तो सेठ जी के हथकंडे का तमाशा ही देखने चले आये ।

बलबल सिंह—(**चिढ़ कर**) लेकिन दिखा रहे हैं आप अपनी बदजबानी का तमाशा। किसी के घर पर आकर जलकटी सुनाने में शर्म नहीं आती आपको ?

अरुण —(**जोर से हँसकर**) अरे, शर्म तो इस देश से उस दिन ही बिदा हो गयी जिस दिन से आप जैसे महानुभाव नेता कहलाने लगे ।

ढनमनिया —(**अरुण से**) सम्भल कर सम्भल कर अरुण बाबू, इतना तेज मत चलिये कि ठोकर लग जाय और ढनमनिया गुरु भी मुँह ताकते रह जांय ।

अरुण —चिंता मत करो गुरु, ठोकरें खाने से पहले तुमको भी समझ नहीं आयेगी ।

ढनमनिया —(**आँखे फाड़कर**) मुझको !

बलबल सिंह—(**अरुण से**) अपना काम कीजिये और रास्ता लीजिये ।

तिकड़म मल—और सुन लो अरुण बाबू कि मैंने यही दिखाने के लिए (**ढनमनिया और बलबल सिंह की ओर संकेत कर**) इन्हें बुलाया था कि सुनील बाबू की दोहरी चाल अपनी आँखों से देख लें ।

अरुण —सुनील के तीर सम्भालने वाले कवच उसके ही साथी हो जांय, इससे ज्यादा आप कुछ चाहेंगे भी क्या सेठ जी !

ढनमनिया —(**सेठ की ओर घूमकर**) वाह रे सेठ जी, इसमें इतनी मेहनत करने की क्या जरूरत थी । सीधे-सीधे कह दिया होता । ऐसा तो है नहीं कि हम लोग कुछ कहें और सुनील बाबू न माने ।

बलबल सिंह—(**अधिकार पूर्वक**) मानेंगे क्यों नहीं । पार्टी में रहना है तो मानना ही होगा ।

अरुण —हाँ-हाँ, सो तो है ही । लेकिन नकली बात के चक्कर में असली बात पीछे छूटी जा रही है ।

अरुण —आज तो सुनील को आपने बुलाया था !

(ढनमनिया गुरु चौंकते हैं)

तिकड़म मल—**(परेशानी छिपाने की मुद्रा में)** बुलाया क्या था....।

अरुण —यों ही कह दिया था। नहीं-नहीं, कहला दिया था।

ढनमनिया —**(आश्चर्य की मुद्रा में तिकड़म मल से)** सुनील बाबू को आपने बुलाया था !

अरुण —**(ढनमनिया से)** अपनी कहो गुरु, तुम कैसे आये ?

तिकड़म मल—अरुण बाबू......... ।

अरुण —**(तिकड़म मल की उपेक्षा करते हुए बलबल सिंह की ओर देखकर)** और बलबल सिंह भी क्या यों ही आ गये हैं ?

(बलबल सिंह और ढनमनिया एक साथ तिकड़म मल की ओर देखते हैं।)

ढनमनिया —बड़ा मजा है इस दुनिया में !

अरुण —हाँ, कभी-कभी बेवकूफ बनने में भी मजा आता है।

बलबल सिंह—अपना मतलब कहिये जनाब, आप तो बिना बुलाये आये हैं न ?

अरुण —अपने राम तो तमाशबीन हैं बलबल सिंह जी। कुछ नहीं मिला तो सेठ जी के हथकंडे का तमाशा ही देखने चले आये।

बलबल सिंह—**(चिढ़ कर)** लेकिन दिखा रहे हैं आप अपनी बदजबानी का तमाशा। किसी के घर पर आकर जलकटी सुनाने में शर्म नहीं आती आपको ?

अरुण —(**जोर से हँसकर**) अरे, शर्म तो इस देश से उस दिन ही विदा हो गयी जिस दिन से आप जैसे महानुभाव नेता कहलाने लगे।

ढनमनिया —(**अरुण से**) सम्भल कर सम्भल कर अरुण बाबू, इतना तेज मत चलिये कि ठोकर लग जाय और ढनमनिया गुरु भी मुँह ताकते रह जांय।

अरुण —चिंता मत करो गुरु, ठोकरें खाने से पहले तुमको भी समझ नहीं आयेगी।

ढनमनिया —(**आँखे फाड़कर**) मुझको !

बलबल सिंह—(**अरुण से**) अपना काम कीजिये और रास्ता लीजिये।

तिकड़म मल—और सुन लो अरुण बाबू कि मैंने यही दिखाने के लिए (**ढनमनिया और बलबल सिंह की ओर संकेत कर**) इन्हें बुलाया था कि सुनील बाबू की दोहरी चाल अपनी आँखों से देख लें।

अरुण —सुनील के तीर सम्भालने वाले कवच उसके ही साथी हो जांय, इससे ज्यादा आप कुछ चाहेंगे भी क्या सेठ जी !

ढनमनिया —(**सेठ की ओर घूमकर**) वाह रे सेठ जी, इसमें इतनी मेहनत करने की क्या जरूरत थी। सीधे-सीधे कह दिया होता। ऐसा तो है नहीं कि हम लोग कुछ कहें और सुनील बाबू न माने।

बलबल सिंह—(**अधिकार पूर्वक**) मानेंगे क्यों नहीं। पार्टी में रहना है तो मानना ही होगा।

अरुण —हाँ-हाँ, सो तो है ही। लेकिन नकली बात के चक्कर में असली बात पीछे छूटी जा रही है।

ढनमनिया — आगे लाओ, आगे लाओ अरुण बाबू। पीछे न छूटने पाये। सब ठीक हो जायगा।

अरुण —क्या ठीक हो जायगा ?

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) सब ठीक हो जायगा न ?

बलबल सिंह—अरे, बिगड़ा ही क्या है। कोई बिगाड़ भी क्या सकता है।

अरुण —(**सोचते हुए**) गहरी चाल है सेठ जी की। वह आपके दिमाग में नहीं धँस सकी।

तिकड़म मल—(**गुस्से में भरकर**) जो नहीं धँस सकी, वह आप धँसा दीजिये। तिकड़म मल धौंस में नहीं आने वाले।

अरुण —अब धौंस में आने की जरूरत भी क्या है। कारखाना, हवेली, मोटर.........।

तिकड़म मल—(**चिल्लाकर**) बकवाद बन्द कीजिये।

(ढनमनिया और बलबल सिंह अरुण को देखते हैं। बलबल सिंह क्रुद्ध है लेकिन ढनमनिया के चेहरे पर खुशी है)

अरुण —तिकड़म मल, मुझपर रोब नहीं चलेगा। मैं जानता हूँ कि कारखाने के नाम पर सेठ जी के पास केवल साइनबोर्ड है। फिर भी कच्चे माल का इम्पोर्ट लाइसेंस........

तिकड़म मल—(**गुस्से में भरकर दरवाजे की ओर संकेत करते हुए खड़े होकर**) मैं कहता हूँ, निकल जाइये यहाँ से।

अरुण —(**खड़े होकर**) सरकार से ६ रुपये सैकड़ा सूद पर मोटी रकम लेकर २५ रुपये सैकड़ा सूद कमा रहे

हैं आप। हाथ-पैर हिलाये बिना १९ रुपये सैकड़ा के लाभ की यह गर्मी भी जानता हूँ सेठ।

तिकड़म मल—(**अरुण को ढकेलते हुए गुस्से में**) मैं कहता हूँ निकल जाइये यहाँ से।

(**बलबल सिंह खड़े होकर आस्तीन चढ़ाते हैं**)

बलबल सिंह—(**अरुण से**) आप आये हैं क्या करने ?

अरुण —सुनील के खिलाफ तिकड़म मल की साजिश खत्म करने।

ढनमनिया —(**खड़े होकर अरुण के एक कंधे पर हाथ रखते हुए**) अरुण बाबू, आपने हमें क्या माटी का माधव समझ रखा है। अरे, मेरा नाम ढनमनिया गुरु है, ढनमनिया गुरु! छप्पन घाट का पानी पीकर बैठा हूँ। आप रास्ता लीजिये।

बलबल सिंह—बड़े आये सुनील के चाहने वाले। गुंडई के अलावा और कुछ भी आता है ?

ढनमनिया — (**अरुण को दरवाजे की ओर ले जाते हुए**) यह राजनीति है अरुण बाबू, राजनीति। गुरु ऐसी चाल चलते हैं कि कौड़ी चित्त गिरे या पट्ट, रहेगी गुरु की ही।

अरुण —(**घूम कर तिकड़म मल से**) एक बात सुन लीजिये सेठ जी। आप सुनील के खिलाफ जहर फैलाने में भले ही कामयाब हो जाँय, लेकिन मैं भीं आप के चेहरे पर पड़ा नकाब उतार कर ही दम लूँगा।

बलबल सिंह— (**झटके से आगे बढ़ते हुए**) जाओ-जाओ, बहुत देखे हैं ऐसे तीसमार खाँ।

तिकड़म मल—ऐसी गीदड़ भभकी मैंने वहुत देखी है।

अरुण —(**सेठ जी की ओर पूरी तरह घूम कर**) गीदड़ भभकी नहीं सेठ जी। फर्जी इम्पोर्ट लाइसेंस को वचाये रखने के लिए हुआ सौदा।

तिकड़म मल—कैसा लाइसेंस ? (**परेशान होकर**) कैसा सौदा ?

अरुण —वही रोलेक्स ! माल जापानी। यहाँ रीलिंग के वाद हिंदुस्तानी। खड़े खड़ विक्री और...... ।

तिकड़म मल— (**शांत होकर**) अरुण वावू, आप झगड़ा करने की कसम खा कर आये हैं क्या ?

ढनमनिया —हाँ अरुण वावू, आप की वात बे-सिर-पैर की लगती है। कलियुग में धर्मराज कौन है ? तिकड़म मल डालर भी वेचें तो किसी के वाप का क्या ?

वलबल सिंह—दूध का धोया कौन है ? तिकड़म मल तो वक्त पर दूसरे की मदद भी करते हैं। माल मार कर ठेंगा निखाने वाले तो भरे पड़े हैं।

ढनमनिया —(**अरुण से**) आप इतमिनान रखिये। कोई सुनील वाबू से झगड़ा नहीं करेगा।

अरुण —करे भी, तो सुनील परवाह करने वाला नहीं है।

तिकड़म मल—(**माथे तक हाथ उठा कर अरुण को नमस्कार करते हुए**) मान लिया, मान लिया। आपके सुनील बाबू वड़े धर्मात्मा हैं, आदर्शवादी हैं। अव जाइये, पिंड छोड़िये।

वलवल सिंह—(**अरुण से**) तिल को ताड़ बनाने से कोई फायदा न होगा।

ढनमनिया —हाँ अरुण बाबू, अब आप को चले ही जाना चाहिये।

अरुण —(**ढनमनिया से**) और तुमको यहाँ पिंडा पारना है क्या ?

ढनमनिया —जाओ अरुण बाबू, हुज्जत करने से क्या लाभ।

अरुण —(**सेठ से**) क्यों सेठ जी। जाऊँ ? (**कुछ सोचने लगता है**) हाँ, एक बात तो भूल ही गया।

तिकड़म मल—(**झल्ला कर**) वह भी कह डालिये।

अरुण —बात अकेले में कहने की है।

(**एक-एक कर ढनमनिया गुरु और बलबल सिंह को देखता है**)

तिकड़म मल—फिर कभी सही।

अरुण —देर हो जायगी।

तिकड़म मल—(**झल्लाकर**) तो मैं क्या करूँ !

ढनमनिया —(**सेठ से**) अन्दर चले जाइये।

तिकड़म मल—(**रोष में**) मैं अन्दर नहीं जा सकता।

अरुण —क्यों ?

तिकड़म मल—आप पूछने वाले हैं कौन ?

अरुण —उस बयान का राज जानने वाला जिस पर आप सुनील से हस्ताक्षर करवाना चाहते थे और जिसमें……… ।

(**ढनमनिया गुरु और बलबल सिंह घूर-घूर कर सेठ को देखते हैं**)

तिकड़म मल—(**कुछ घबरा कर**) मैं कहता हूँ अरुण बाबू, आप यहाँ से चले जाइये।

अरुण —जाऊँगा लेकिन इस बात का जवाब लेकर कि साजिश के पीछे किसका हाथ है ?

तिकड़म मल—(**क्रोध से काँपते हुए**) आप लाट साहब हैं या गवरनर। मैं किसी बात का जवाब नहीं देता।

अरुण —तो आप यह भी नहीं छिपा सकते कि जिस बयान पर आप सुनील से हस्ताक्षर करवाना चाहते थे; उसमें......... ।

तिकड़म मल—(**झपट कर अरुण को बाहर ढकेलते हुए**) बहुत बरदास्त कर चुका। बेहतर यही है कि यहां से चले जाइये।

अरुण —नहीं तो आप चोरी का इलजाम लगायेंगे। डकैती में फँसायेंगे। पुलिस ..... ।

तिकड़म मल—(**चीखकर**) अरुण बाबू...... ।

अरुण —सेठ तिकड़म मल, पैसे के लिए हर कदम पर ईमान को बेचने और खरीदने वाले तुम्हारे जैसे सेठ मैंने बहुत देखे हैं। फिर भी, तुम रात-दिन सफेद को स्याह करते रहो, मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन सुनील को गिराने की कोशिश जरूर महँगी साबित होगी।

ढनमनिया —(**अरुण से**) आपस में गरमा-गरमी से क्या फायदा। आप किस बयान की बात कह रहे थे ?

अरुण —जो बयान पाँच लाख का ऋण लेने की लालच में तुम्हारी पार्टी के घोर शत्रु डंकानन्दन की

सलाह पर सेठ ने चुक्कड़ी पत्रकार रवुआ से लिखवा कर अन्दर रखा है।

तिकड़म मल—यह सब बकवाद है।

ढनमनिया—उस बयान में तीर है या गोली ?

अरुण—मंडलानन्द की महंथी और बलबल सिंह ढनमनिया कम्पनी का कच्चा चिट्ठा।

(कुछ देर के लिए सन्नाटा छा जाता है।)

ढनमनिया—क्या यह सच है सेठ जी ?

तिकड़म मल—**(खीजकर)** कह तो चुका कि सब बकवाद है !

बलबल सिंह—**(सेठ से)** मुझको अन्दर ले चलिये। सब मामला ठीक हो जायगा।

(तिकड़म मल, बलबल सिंह को देखता है। बलबल सिंह आँख से कुछ संकेत करता है। ढनमनिया गुरु ताड़ जाते हैं)

तिकड़म मल—**(बलबल सिंह से)** झूठ का मुँह काला होना चाहिये, इसलिए आप चल सकते हैं।

(बलबल सिंह के बढ़ने पर ढनमनिया गुरु भी बढ़ जाते हैं)

ढनमनिया—मैं भी चलता हूँ। एक से दो भले। अरुण बाबू को कुछ कहने का मौका न मिलेगा।

बलबल सिंह—**(ढनमनिया को घूर कर)** क्या कहने का मौका नहीं मिलेगा ?

ढनमनिया—यही कि........

बलबल सिंह—**(रोष में)** तिकड़म मल ने बलबल सिंह को पटा लिया।

तिकड़म मल—(**कुछ घवरा कर**) मैं कहता हूँ अरुण वावू, आप यहाँ से चले जाइये ।

अरुण —जाऊँगा लेकिन इस वात का जवाव लेकर कि साजिश के पीछे किसका हाथ है ?

तिकड़म मल—(**क्रोध से काँपते हुए**) आप लाट साहब हैं या गवरनर । मैं किसी वात का जवाव नहीं देता ।

अरुण —तो आप यह भी नहीं छिपा सकते कि जिस वयान पर आप सुनील से हस्ताक्षर करवाना चाहते थे; उसमें......... ।

तिकड़म मल—(**झपट कर अरुण को बाहर ढकेलते हुए**) वहुत वरदास्त कर चुका । वेहतर यही है कि यहां से चले जाइये ।

अरुण —नहीं तो आप चोरी का इलजाम लगायेंगे । डकैती में फँसायेंगे । पुलिस ..... ।

तिकड़म मल—(**चौंककर**) अरुण वावू...... ।

अरुण —सेठ तिकड़म मल, पैसे के लिए हर कदम पर ईमान को वेचने और खरीदने वाले तुम्हारे जैसे सेठ मैंने बहुत देखे हैं । फिर भी, तुम रात-दिन सफेद को स्याह करते रहो, मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है । लेकिन सुनील को गिराने की कोशिश जरूर महँगी सावित होगी ।

ढनमनिया —(**अरुण से**) आपस में गरमा-गरमी से क्या फायदा । आप किस वयान की वात कह रहे थे ?

अरुण —जो वयान पाँच लाख का ऋण लेने की लालच में तुम्हारी पार्टी के घोर शत्रु डंकानन्दन की

सलाह पर सेठ ने चुक्कड़ी पत्रकार रवुआ से लिखवा कर अन्दर रखा है।

तिकड़म मल—यह सव वकवाद है।

ढनमनिया —उस वयान में तीर है या गोली ?

अरुण —मंडलानन्द की महंथी और वलवल सिंह ढनमनिया कम्पनी का कच्चा चिट्ठा।

(कुछ देर के लिए सन्नाटा छा जाता है।)

ढनमनिया —क्या यह सच है सेठ जी ?

तिकड़म मल—(**खीजकर**) कह तो चुका कि सव वकवाद है !

वलबल सिंह—(**सेठ से**) मुझको अन्दर ले चलिये। सव मामला ठीक हो जायगा।

(तिकड़म मल, बलबल सिंह को देखता है। बलबल सिंह आँख से कुछ संकेत करता है। ढनमनिया गुरु ताड़ जाते हैं)

तिकड़म मल—(**बलवल सिंह से**) झूठ का मुँह काला होना चाहिये, इसलिए आप चल सकते हैं।

(बलबल सिंह के बढ़ने पर ढनमनिया गुरु भी बढ़ जाते हैं)

ढनमनिया —मैं भी चलता हूँ। एक से दो भले। अरुण बाबू को कुछ कहने का मौका न मिलेगा।

बलबल सिंह—(**ढनमनिया को घूर कर**) क्या कहने का मौका नहीं मिलेगा ?

ढनमनिया —यही कि.........

वलवल सिंह—(**रोष में**) तिकड़म मल ने वलबल सिंह को पटा लिया।

ढनमनिया —अरे आप उड़ती चिड़ैया को पहचानते हो। आप को कुछ बताना है क्या !

बलबल सिंह—(**चिड़चिड़ाते हुए**) बलबल सिंह पटाये जा सकते हैं तो ढनमनिया गुरु भी पटाये जा सकते हैं। अन्तर क्या पड़ा ?

ढनमनिया —(**मुस्करा कर**) अरे, पटना-पटाना तो ढनमनिया गुरु का धंधा है। सबको मालुम है।

बलबल सिंह—(**सेठ की ओर घूम कर**) इस बकवाद में क्या रखा है। कोई बयान है तो ले ही आइये सेठ जी।

(**तिकड़म मल की ओर देखकर अरुण मुस्कराता है**)

तिकड़म मल—(**शांत स्वर में सबसे**) देखिये यह पार्टी का दफ्तर नहीं है। मुझको नेतागिरी नहीं करनी है। धंधा करना है। आप लोग अपना-अपना रास्ता पकड़े, तो बड़ी कृपा होगी।

अरुण —बहुत बुरा लग रहा है सेठ जी !

तिकड़म मल—यही समझ लीजिये।

अरुण —किसी की पगड़ी उतारने की साजिश अच्छी लगती है ?

तिकड़म मल—पगड़ी तो आप उछाल रहे हैं। वह भी सीनाजोरी के साथ। मेरे घर पर मेरा अपमान !

ढनमनिया —(**सेठ से**) अच्छा सेठ जी, में तो चला ! यहाँ कबूतर नही अंडा उड़ाया जा रहा है। मुझे तो मजा नहीं आता। (**बलबल सिंह से**) चलिये आप भी।

बलबल सिंह—तुल चलो गुरु, मैं आता हूँ।

ढनमनिया —अरे, यहाँ क्या रखा है !

बलबल सिंह—मैंने कब कहा कि रखा है कुछ ।

ढनमनिया —तब यहाँ बैठ कर शंख फूकने से क्या फायदा !

बलबल सिंह—फ़ायदे के लिए तुम आते होगे । मुझको सेठ जी ने याद किया था ।

(अरुण को ओर देखकर ढनमनिया गुरु मुस्कराते हैं)

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) अब सेठ जी ही रोक भी रहे हैं आपको ! (**सेठ को ओर देख कर**) क्यों सेठ जी ?

तिकड़म मल—(**कर्कश स्वर में**) मैं किसी को नहीं रोकता । आप सब जाइये ।

ढनमनिया —कहिये नेता जी, अब धकियाये जाने पर ही चलना होगा क्या ?

बलबल सिंह—(**बिगड़ कर**) कौन पैदा हुआ है धकियाने वाला ?

ढनमनिया —(**अरुण से**) चलिये, हम लोग ही चलें । मुझको आप से कुछ काम भी है ।

अरुण —मुझसे !

ढनमनिया —हाँ-हाँ, आप से । बेटा डंकानन्द से समझना होगा । अपने को तीसमार खाँ समझने लगा है । उसकी ऐसी-की-तैसी : सुनील बाबू से ही उसका भंडाफोड़ न कराया तो मेरा नाम ढनमनिया गुरु नहीं ।

अरुण —अरे डंकानन्द तो मंडलानन्द को खा जाना चाहता है । केवल सुनील से डरता है ।

ढनमनिया —उसकी ऐसी-की-तैसी । उसने अभी गुरु का धोबियापाट नहीं देखा । चारो खाना चित्त नजर

न आये तो कहना। (सेठ की ओर देख कर) सेठ जी ठहरे सीधे-साधें आदमी। राजनीति में आटा-दाल का भाव क्या जानें। ऐसे लपाड़िया क्या ऋण दिलायेंगे!

तिकड़म मल—(उबल कर) कौन कहता है, मुझको ऋण चाहिये ?

ढनमनिया —(मुँह मोड़ कर) मुझसे भी नाराज हैं सेठ जी!

बलबल सिंह—बकवाद से नाराज नहीं तो क्या खुश होंगे ? मामूली बात को मामूली ढंग से अरुण बाबू ने कहा होता तो सेठ जी को दुःख नहीं होता।

ढनमनिया —सो तो है भाई। सेठ जी सदा अपने मददगार रहे हैं। सुनील बाबू की तो आदत है बड़बड़ाने की।

(अरुण जाना चाहता है। ढनमनिया गुरु रोक लेते हैं)

ढनमनिया —शाम को कहाँ मुलाकात होगी ?

अरुण —अपन तो रमता जोगी हैं।

ढनमनिया —अच्छा, मैं ही खोज लूँगा।

(अरुण पुनः जाना चाहता है लेकिन इस बार बलबल सिंह संकेत से रोक लेता है)

बलबल सिंह—यहाँ की बात यहीं रह जाय। आपस में कीचड़ उछालने से अपनी ही ताकत टूटेगी।

अरुण —अच्छी सलाह है। सेठ जी को राजी कर लीजिये।

बलबल सिंह—सेठ जी कहाँ बाहर हैं। शाम को मैं खुद सुनील बाबू से मिलूँगा।

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) चलिये, सेठ जी से फिर मिल लिया जायगा।

बलबल सिंह—मेरा तुम्हारा क्या साथ ! तुम दक्षिण की ओर, मैं उत्तर की ओर जाऊँगा। तुम चलो। मैं भी चला जाऊँगा !

ढनमनिया —सेठ जो काफी तंग आ चुके हैं। उन्हें आराम करने देना चाहिये।

बलबल सिंह—तुम चलो गुरु, मैं बात करके आता हूँ।

ढनमनिया —(**आश्चर्य से**) बात करके !

अरुण —(**ढनमनिया से**) लगता है, तुम भी अभी डटोगे गुरु। मैं चलता हूँ।

(अरुण का गमन। सब अपनी-अपनी जगह बैठ जाते हैं। सन्नाटा रहता है)

बलबल सिंह—देखा गुरु, कहता था न कि सुनील के कारण अरुण हवा को काटता घूमता है।

ढनमनिया —तो काटने दो। अपना क्या जाता है ?

बलबल सिंह—वाह, जाता कैसे नहीं ! सेठ जी ऐसे मददगार के साथ ऐसा सलूक होता रहे तो चल चुकी गाड़ी।

ढनमनिया —(**कुछ सोचकर**) मंडलानन्द से बात करनी होगी। फोड़ा कहीं नासूर न बन जाय।

तिकड़म मल—अब तो नासूर हो चुका गुरु। कोई साथ रहने वाला नहीं है।

ढनमनिया —छीः, आप भी कैसी बातें करते हैं। आपको मंडलानन्द जी जानते नहीं क्या ? फिर ढनमनिया गुरु तो हैं ही।

वलवल सिंह—छोड़ो सेठ जी, ग्राप शहर क्या, सूबे के जाने-माने रईस हैं। छोकरों से ग्रापका क्या मुकावला।

ढनमनिया —शिकायत आप की ठीक है सेठ जी। लेकिन मुँह लगी डोमिन ताल-बेताल गायेगी ही।

तिकड़म मल—जहाँ ऐसी हालत हो, वहाँ से हटने के ग्रलावा मेरे ऐसे ग्रादमी के लिए और उपाय क्या है ?

ढनमनिया —ग्राप मंडलामन्द जी से कहिये।

तिकड़म मल—(**झझककर**) मैं नहीं कहता किसी नन्द से। जिसको गरज होगी, सौ वार यहाँ अयेगा। आप लोगों से कुछ हो सके, तो कीजिये वरना राम-राम !

वलवल सिंह—(**खुशामद की मुद्रा में सेठ से**) हमने ग्रापकी वात कभी गिरने दी है क्या ?

तिकड़म मल—वातें वहुत हो चुकीं। अव काम की वात होनी चाहिये नेता जी।

ढनमनिया —काम की वात !

तिकड़म मल—(**रोब से**) हाँ, काम की वात। वात भी विलकुल सीधी। मेरा ग्रपमान करने वालों को दंड मिलना चाहिये।

बलबल सिंह—आप इतमिनान रखिये। हम जरूर कोशिश करेंगे।

तिकड़म मल—(**आवेश में**) करेंगे नहीं। ग्राज और ग्रभी शुरू करनी चाहिये।

(बलदल सिंह और ढनमनिया गुरु आश्चर्य से तिकड़म मल को देखते हैं)

तिकड़म मल—(**उपहास के स्वर में**) हो गया न जोश ठंढा ! अब जाइये आप लोग । मैं खुद देख लूँगा ।

ढनमनिया —(**सोचने की मुद्रा में**) सेठ जी, कुछ करने से पहले भूमिका रचनी पड़ती है ।

तिकड़म मल—भूमिका क्या रचनी है । सीधा और बिलकुल सीधा वार होना चाहिये । है हिम्मत ?

बलबल सिंह—(**जोश में**) हिम्मत को मत ललकारिये सेठ जी ।

तिकड़म मल—(**ढनमनिया से**) क्यों ढनमनिया गुरु ?

ढनमनिया —(**मुस्कराकर**) यह तो योजना का युग है सेठ जी । योजना बनाने में समय भी लगता है और पैसा भी ।

तिकड़म मल—(**दृढ़ स्वर में**) योजना तैयार है ।

ढनमनिया
बलबल सिंह }—(**एक साथ**) योजना तैयार है !

तिकड़म मल—बिलकुल तैयार और सीधी । पहाड़ तोड़ने की जरूरत नहीं है । सुनील और अरुण के खिलाफ प्रचार का तूफान पैदा कर दिया जाय । उनको दलाल, शराबी, व्यभिचारी, घमंडी और गुंडा घोषित कर दिया जाय । टूटपूँजिया अखबारों को पैसा देकर कीचड़ उछलवाया जाय । क्या खयाल है ?

(ढनमनिया गुरु, बलबल सिंह पर नजर जमाते हैं)

ढनमनिया —आसान काम है क्या ?

बलबल सिंह—बिलकुल आसान । (**जोश में**) यह सब किये बिना काम नहीं चलेगा ।

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) सुनील के चरित्र पर अंगुली उठा सकने वाले कितने लोग हैं ?

बलबल सिंह—तुम हो गुरु निरे गदाई । अरे सुनील क्या भगवान है ?

तिकड़म मल—भगवान भी हो तो क्या ! प्रचार का तूफान चरित्र के पहाड़ को गिरा सकता है ।

ढनमनिया —पहाड़ गिराने पर भी चुहिया ही हाथ लगी तो ? काम भी अनैतिक होगा ।

तिकड़म मल—नैतिकता से चिपके रहने वाले भूखे मरते हैं। उस दिन सेल्स टैक्स दफ्तर में तुम्हारी नैतिकता कहाँ गयी थी गुरु ?

(**ढनमनिया गुरु माथे का पसीना पोंछने लगते हैं और रूमाल से मुँह पर हवा करते हैं**)

तिकड़म मल—सुनील पर तिकड़म मल का आरोप लोग ठुकरा सकते हैं लेकिन सुनने वाले पर उसका यह आरोप फौरन अमल करेगा कि ढनमनिथा गुरु दलाल हैं ।

(**ढनमनिया गुरु भौचक होकर तिकड़म मल को देखते हैं**)

बलबल सिंह—इन बातों को छोड़िये सेठ जी । ढनमनिया गुरु ने आपको ही बचाया था ।

तिकड़म मल—(**शांत भाव से**) इसलिए ही गुरु को मानता हूँ । इनपर भरोसा रखता हूँ । बेकार तैश में आ गया ।

ढनमनिया —जमाने की करामात है सेठ जी । होम करते हाथ जलता है । सेल्स टैक्स के मामले में न आप की

पैरवी करता, न आज यह सुनना पड़ता। खैर, यह सब होता ही है। ढनमनिया गुरु तो जहाँ लहा पाते हैं, लहा लेते हैं।

तिकड़म मल—मैं भी बाहर कब रहा। अब भी हाजिर हूँ। हुकुम करो। जो हो सकेगा, जरूर करूँगा। सुनील का माथा अवश्य ठिकाने लगाना चाहता हूँ। अरुण उसकी वजह से ही बलबलाता है।

बलबल सिंह—एक ढेल में दो शिकार!

तिकड़म मल—मैं तो आप लोगों का मुहताज हूँ।

बलबल सिंह—शर्मिदा मत करो सेठ जी। हम भी दोस्ती दिखा देंगे।

तिकड़म मल—यह भरोसा तो है ही। मेरा खयाल है कि हजार-दो हजार में काम सीधा हो जायगा। सुनील और अरुण कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रह जायेंगे।

बलबल सिंह—तो फिर⋯ ⋯।

ढनमनिया —(**विचार-मग्न होने की मुद्रा में**) इस समय कितनी रकम निकाल रहे हैं?

बलबल सिंह—(**सेठ से**) जल्दी क्या है। थाह-पता लेकर शाम को बात कर ली जायगी।

तिकड़म मल—हाँ-हाँ बात हो जायगी। अखाड़ियों के चाय-पान के लिए एक सौ रुपये आप अपने पास रख लें, तो कोई हर्ज नहीं है।

बलबल सिंह—(**आगे बढ़कर सेठ का हाथ दबाते हुए**) हम आपके साथ हैं। इतनी जल्दी क्या है।

ढनमनिया —नेता जी ठीक कहते हैं सेठ जी। जल्दी का काम

शैतान का। (उठते हुए) काम ऐसा ही पसन्द है ढनमनिया गुरु को कि साँप मर जाय और लाठी भी न टूटे । (दरवाजे की ओर बढ़ते हुए) नमस्कार।

(ढनमनिया गुरु का गमन)

तिकड़म मल—गुरु की चाल समझना मुश्किल है।

बलबल सिंह—चाल-वाल कुछ नहीं है। हम लोग साथ रखते हैं, इसलिए दिमाग ऊँचा हो गया है।

तिकड़म मल—शुरू से अन्त तक दोहरे अर्थ वाली बात !

(सेठ जी कुछ सोचते नजर आते हैं)

बलबल सिंह—बकवादी है, खुद नहीं समझते कि क्या कह रहे हैं।

तिकड़म मल—(उसी मुद्रा में टेंट से एक सौ का एक नोट निकाल कर बलबल सिंह की ओर बढ़ाते हुए, उनकी ओर देखे बगैर) इसको आप रख लें।

बलबल सिंह—(नोट को जल्दी से लेते हुए) इतनी जल्दी क्या है ! गाड़ी चलने दीजिये। सुनील से मुझको भी बदला लेना है।

तिकड़म मल—(विचार-मग्न मुद्रा में ही) तिकड़म करते-करते सेठ तिकड़म मल ने इतनी उम्र गुजार दी। देखना है कि सुनील कितने गहरे पानी में हैं। खतरा अरुण से है।

बलबल सिंह—अरे वह ढपोर शंख हैं।

तिकड़म मल—(मुस्करा कर बलबल सिंह की ओर देखते हुए) राजनीतिक लोग आदमी को पहचानने में हमेशा

धोखा खाते हैं। यह काम व्यापारियों का ही है। ढनमनिया गुरु......।

बलबल सिंह—आप चिंता न करें। ढनमनिया गुरु को मैं दुरुस्त कर लूँगा। जायँगे कहाँ? आज शाम को 'रम' मँगाकर रखियेगा। बाकी सब मैं ठीक कर लूँगा।

तिकड़म मल—(**आश्चर्य से**) 'रम!'

बलबल सिंह—हाँ-हाँ, वैसे गुरु दूधिया ही छानते हैं। बाजार से ठंढई मँगा लीजियेगा।

तिकड़म मल—(**मुस्करा कर**) हूँ......।

बलबल सिंह—(**खड़े होकर नमस्कार करते हुए**) शाम को इन्तजाम ठीक रखियेगा।

तिकड़म मल—नस हाथ में आ गयी तो फिर चूकने का क्या काम। 'रम' छोड़िये। स्काच रहेगी। ढनमनिया गुरु को आना चाहिये।

बलबल सिंह—(**समझाने की मुद्रा में**) आयेंगे-आयेंगे। भरोसा रखिये। सिर्फ उन्हें मालूम न हो कि मैंने रुपये लिये हैं।

तिकड़म मल—क्यों?

बलबल सिंह—अरे, गुरु की जबान पर लगाम रहती नहीं है। फँस जाने दीजिये।

तिकड़म मल—(**अर्थ-भरी मुद्रा में**) कैसे लगेगी लगाम?

बलबल सिंह—(**मुस्करा कर**) आपको बताना होगा। आपने सेल्स टैक्स वाली बात कही तो गुरु के माथे पर पसीना चुहचुहाने लगा।

तिकड़म मल—(टेंट से एक सौ का एक नोट और निकाल कर बलबल सिंह की ओर बढ़ाते हुए) आप यह नोट गुरु को दे दीजियेगा।

बलबल सिंह—(नोट लेकर सेठ के मुँह पर आँखें जमाते हुए) गुरु को !

तिकड़म मल—(टेंट से तीसरा नोट निकाल कर) आप दो सौ रख लीजिये लेकिन एक सौ गुरु के पास भी पहुँच जाय।

(नोट लेकर बलबल सिंह नमस्कार करता है और बाहर चला जाता है। तिकड़म मल अट्टहास करता हैं। रंगमंच पर पूर्ण अंधकार)

● ड्राप ●

अंक : चार

(प्रथम अंक का दृश्य । तिकड़म मल आते हैं और बैठ जाते हैं)

मंडलानन्द —(**मुस्करा कर**) सुना है, वहुत तिकड़म चल रहा है तिकड़म मल जी ! अब तो आपके दर्शन भी दुर्लभ है ।

वंचक —(**उपहास के स्वर में**) आज-कल डंकानन्द से छुट्टी नहीं मिलती है सेठ जी को ।

मंडलानन्द —(**मुस्करा कर**) ऐसे ही चलता है। इस समय डंकानन्द का ही डंका बज रहा है लेकिन यह सरकार चलने वाली नहीं तिकड़म मल ।

तिकड़म मल—(**खुशामद के स्वर में**) आप भी क्या कह रहे हैं ! कहाँ डंकानन्द और कहाँ आप !

(बलबल सिंह का प्रवेश । सबको नमस्कार करता है । तिकड़म मल से आँखें चार होती हैं)

मंडलानन्द —(**बलबल सिंह पर नजर गड़ाकर**) क्या झगड़ा लगा रखा है वलवल सिंह ? ढनमनिया गुरु शिकायत कर रहे थे ।

वलबल सिंह—(**उपेक्षा भाव से**) ढनमनिया गुरु की बात छोड़िये।

किसकी शिकायत वह नहीं करते। यह तो नहीं बताया होगा कि खुद मारामारी करते घूमते हैं।

मंडलानन्द —(**ढनमनिया की ओर देखकर मुस्कराते हुए**) कहो गुरु, मीठा-मीठा गप्, कड़ुवा-कड़ुवा थू !

ढनमनिया —बस थू...थू होने ही वाला है।

वंचक —(**चिढ़ाने की गरज से**) सुनील बाबू भी यही कहते थे।

बलबल सिंह—जरूर कहते होंगे। वह जमाने भर से लड़े और हम उनका साथ दें, नहीं तो थू...थू। वाह रे जमाना !

वंचक —आजकल मुसलिम राजनीति के पीछे पड़े हैं। सारा का सारा इलाका नाराज हो रहा है।

मंडलानन्द —इस मामले में मेरे पास भी लोग आये थे। बेलगाम आदमी हैं।

बलबल सिंह—अरुण बाबू ने उन्हें और आसमान पर चढ़ा रखा है। तिकड़म मल को ही क्या नहीं कह डाला सुनील ने।

तिकड़म मल—अरे छोड़िये बलबल सिंह जी ! तिकड़म मल रोजगारी है और रोजगारी आजकल सुन ही रहे हैं।

मंडलानन्द —(**चुटकी लेते हुए**) बेचारे मुफ्त ही हलाल हो रहे हैं !

तिकड़म मल—(**झेंपते हुए**) वैसे सुनील बाबू नेक हैं। जिद्दी हैं और टेंटीपन मामला जरा गड़बड़ा देता है।

मंडलानन्द —(**सब पर नजर फेरते हुए**) यह सुनील के खिलाफ अखवारवाजी कैसी ?

ढनमनिया —(**सेठ जी की ओर देखकर मुस्कराते हुए**) सव डंकानन्द का जाल है ।

तिकड़म मल—(**अनजान से**) क्या जाल है गुरु ?

ढनमनिया —(**हाथ से पैंतरा देते हुए**) जाल याने जाल । इधर फंदा, उधर फंदा ।

वचक —डंकानन्द तो यही चाहते हैं कि सब ग्रापस में भिड़ जांय ।

ढनमनिया —(**वलबल सिंह से**) कहो नेता जी, कहता था न यही वात ।

वलवल सिंह—(**तुनुककर**) तुम वहुत सी वातें कहते हो गुरु, कौन कौन-सी याद रखी जाय !

ढनमनिया —(**मजाक उड़ाने के लहजे में**) मैं भी मतलव की वात याद रखने में ही विश्वास करता हूँ । (**सेठ तिकड़म मल की ओर देख कर**) ग्राप तो मुझसे सहमत हैं न सेठ जी ?

तिकड़म मल—(**खुशामद के स्वर में**) वात करने में तुम्हारा जवाव नहीं गुरु । सुनने वाला भकुग्राये विना रह नहीं सकता ।

(मंडलानन्द, ढनमनिया को देखकर मुस्कराते हैं । टेलीफोन की घंटी बजती है । ढनमनिया गुरु लपककर टेलीफोन उठा लेते हैं ।)

ढनमनिया —हाँ...हाँ...ढनमनिया गुरु...कौन...अरुण बाबू... हाँ है . (**रिसीवर मंडलानन्द की ओर बढ़ा देता है**) ।

मंडलानन्द —(**रिसीवर कान से लगाकर**) हलो....नमस्कार.. ... क्या...हाँ....हाँ...ज्यादा चोट आयी . ठीक है... हाँ हाँ... । आता हूँ ।

(**मंडलानन्द रिसीवर रख देते हैं और गम्भीर नजर आते हैं**)

ढनमनिया —(**चौंककर**) क्या सुनील बाबू को चोट... ।

मंडलानन्द —(**गम्भीर स्वर में**) किसी ने सुशील पर आक्रमण कर दिया है । काफी चोट आयी है ।

ढनमनिया —आक्रमण कर दिया है !

(**ढनमनिया गुरु अर्थ-गम्भीर दृष्टि से तिकड़म मल की ओर देखते हैं । तिकड़म मल मुँह घुमा लेते हैं। उनकी और बलबल सिंह की आँखें चार होती हैं**)

मंडलानन्द —(**वंचक से**) ड्राइवर को बुलाओ। अस्पताल जाना होगा ।

(**वंचक का गमन**)

ढनमनिया —(**मंडलानन्द से**) आप अस्पताल जा रहे हैं ?

मंडलानन्द —जाना चाहिये मुझको। सुनील मामूली वर्कर नहीं है ।

ढनमनिया —(**बलबल सिंह से**) आप भी जाइये । जाना चाहिये। संगीन मामला है ।

बलबल सिंह—(**हिचकिचाकर**) जरूर जाऊँगा ।

(**तिकड़म मल हताश से बलबल सिंह की ओर देखते हैं । वंचक का प्रवेश**)

वंचक —(**मंडलानन्द से**) ड्राइवर गाड़ी ला रहा है ।

बलबल सिंह—झगड़ा-झंझट तो चल ही रहा था । छोटे-छोटे अखबार हाथ धोकर पीछे पड़े थे ।

(**मंडलानन्द उठते हैं । सब खड़े हो जाते हैं । मंडलानन्द जाते हैं । सब उनके पीछे जाना चाहते हैं । ढनमनिया गुरु, तिकड़म मल का हाथ पकड़ लेते हैं**)

ढनमनिया —(**धीरे**) जरा ठहरिये सेठ जी ।

(**मंडलानन्द, वंचक और बलबल सिंह का गमन**)

ढनमनिया —(**बैठते हुए**) बैठिये सेठ जी ।

(**सेठ तिकड़म मल अनिच्छा से बैठ जाते हैं**)

ढनमनिया —अब क्या होगा सेठ जी ?

(**सेठ जो घूर-घूरकर ढनमनिया को देखते हैं**)

ढनमनिया —घूम फिरकर बलबल सिंह का नाम रिपोर्ट में आ गया तो वह फूट जायगा ।

तिकड़म मल—(**दिल कड़ा कर**) मुझको इसकी परवाह नहीं है । मुझसे मतलब ?

ढनमनिया —(**सेठ के चेहरे पर नजर जमाते हुए**) मंडलानन्द जी पुलिस को कसे बिना रहेंगे नहीं ।

तिकड़म मल—पुलिस मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती । इस बकवाद से क्या ।

ढनमनिया —(**जमीन की ओर नजर फेरकर कनखी से सेठ को देखते हुए**) कोतवाल की खुशामद में आप यों ही लगे रहे ?

तिकड़म मल—ऐसी की तैसी खुशामद की। डंकानन्द की वजह से मेल-मुलाकात है।

ढनमनिया —और डंकानन्द के कहने से ही यह हुआ है ?

तिकड़म मल—(**चौंक कर आवेश में**) क्या हुआ है !

ढनमनिया —(**सेठ की ओर गर्दन बढ़ाते हुए धीमे से**) सुनील बाबू पर हमला।

तिकड़म मल—(**एकदम असंतुलित दशा में**) यह सब झूठ है।

ढनमनिया —(**वजनदार आवाज में**) झूठ यह भी है कि सुनील बाबू के खिलाफ अखबारों में प्रचार के लिए बलबल सिंह की मार्फत आपने मेरे पास पचास रुपये भिजवाये थे।

तिकड़म मल—(**चौंक कर**) अं ..! पचास रुपये !

ढनमनिया —क्यों, याद नहीं है क्या ?

तिकड़म मल—लेकिन गुरु मैंने सुनील बाबू को समझाने के लिए कहलाया था और रुपये मैंने तुम्हारी माँ की तीर्थ-यात्रा के लिए भेजे थे। वह भी पचास नहीं, एक सौ !

ढनमनिया —(**उछलकर**) क्या ? एक सौ ! तो पचास रुपये बलबल सिंह ने टांक लिये !

तिकड़म मल—(**मुँह बनाकर**) विचित्र आदमी है बलबल सिंह।

ढनमनिया —(**चरका देने की मुद्रा में**) सब चलता है सेठ जी !

तिकड़म मल—अरे क्या चलता है। यह टुच्चापन है। कर्ज चुकाने के लिए मैं अलग से उसको दो सौ रुपये दे चुका था।

ढनमनिया —(आँखें फाड़कर) दो सौ रुपये !

तिकड़म मल—अरे हाँ, तुम्हारे सामने ही कर्ज का रोना रो रहा था। तुम गये तो गले पड़ गया। मैंने कहा—ढनमनिया गुरु की माता जी को तीर्थ-यात्रा के लिए रुपये देने हैं। फिर ले लीजियेगा। लेकिन टस से मस नहीं हुआ।

ढनमनिया —हूँ……!

तिकड़म मल—मुझको तो गुरु दाल में कुछ काला नजर आता है।

ढनमनिया —आयेगा, जरूर नजर आयेगा सेठ जी ! सब कुछ नजर आ जायगा।

तिकड़म मल—(अपनापन दिखाकर) डौल लगे तो सुनील बाबू की खबर लेना।

ढनमनिया —अरे गुरु हैं सुनील बाबू के पक्के दोस्त। वह खबर लेंगे ही। जल्दी क्या है।

तिकड़म मल—(नजर बचाकर) अरुण बाबू तो बवाल पैदा किये बिना रहेंगे नहीं !

ढनमनिया —हैं तो अरुण बाबू बेलौस।

तिकड़म मल—मालुम नहीं, किस पर कीचड़ उछाल देंगे। मुझ पर तो नाराज हैं ही।

ढनमनिया —चिन्ता मत करो सेठ (पुटियाने की मुद्रा में) गुरु सब तरह का हिसाब सम्भाल सकते हैं। अरुण

ढनमनिया —(**जमीन की ओर नजर फेरकर कनखी से सेठ को देखते हुए**) कोतवाल की खुशामद में आप यों ही लगे रहे ?

तिकड़म मल—ऐसी की तैसी खुशामद की। डंकानन्द की वजह से मेल-मुलाकात है।

ढनमनिया —और डंकानन्द के कहने से ही यह हुआ है ?

तिकड़म मल—(**चौंक कर आवेश में**) क्या हुआ है !

ढनमनिया —(**सेठ की ओर गर्दन बढ़ाते हुए धीमे से**) सुनील बाबू पर हमला।

तिकड़म मल—(**एकदम असंतुलित दशा में**) यह सब झूठ है।

ढनमनिया —(**वजनदार आवाज में**) झूठ यह भी है कि सुनील बाबू के खिलाफ अखबारों में प्रचार के लिए बलबल सिंह की मार्फत आपने मेरे पास पचास रुपये भिजवाये थे।

तिकड़म मल—(**चौंक कर**) अं ··! पचास रुपये !

ढनमनिया —क्यों, याद नहीं है क्या ?

तिकड़म मल—लेकिन गुरु मैंने सुनील बाबू को समझाने के लिए कहलाया था और रुपये मैंने तुम्हारी माँ की तीर्थ-यात्रा के लिए भेजे थे। वह भी पचास नहीं, एक सौ !

ढनमनिया —(**उछलकर**) क्या ? एक सौ ! तो पचास रुपये बलबल सिंह ने टांक लिये !

तिकड़म मल—(**मुँह बनाकर**) विचित्र आदमी है बलबल सिंह।

ढनमनिया —(**चरका देने की मुद्रा में**) सब चलता है सेठ जी !

तिकड़म मल—अरे क्या चलता है। यह टुच्चापन है। कर्ज चुकाने के लिए मैं अलग से उसको दो सौ रुपये दे चुका था।

ढनमनिया —(**आँखें फाड़कर**) दो सौ रुपये !

तिकड़म मल—अरे हाँ, तुम्हारे सामने ही कर्ज का रोना रो रहा था। तुम गये तो गले पड़ गया। मैंने कहा—ढनमनिया गुरु की माता जी को तीर्थ-यात्रा के लिए रुपये देने हैं। फिर ले लीजियेगा। लेकिन टस से मस नहीं हुआ।

ढनमनिया —हूँ······!

तिकड़म मल—मुझको तो गुरु दाल में कुछ काला नजर आता है।

ढनमनिया —आयेगा, जरूर नजर आयेगा सेठ जी ! सब कुछ नजर आ जायगा।

तिकड़म मल—(**अपनापन दिखाकर**) डौल लगे तो सुनील बाबू की खबर लेना।

ढनमनिया —अरे गुरु हैं सुनील बाबू के पक्के दोस्त। वह खबर लेंगे ही। जल्दी क्या है।

तिकड़म मल—(**नजर बचाकर**) अरुण बाबू तो बवाल पैदा किये विना रहेंगे नहीं !

ढनमनिया —हैं तो अरुण बाबू बेलौस।

तिकड़म मल—मालुम नहीं, किस पर कीचड़ उछाल देंगे। मुझ पर तो नाराज हैं ही।

ढनमनिया —चिन्ता मत करो सेठ (**पुटियाने की मुद्रा में**) गुरु सब तरह का हिसाब सम्भाल सकते हैं। अरुण

वावू भी वहुत चालू हैं। वलवल सिंह को रकम चटाकर नक्शा वाँधे वैठे हैं।

तिकड़म मल—(**चौंककर**) रकम चटाकर...... !

ढनमनिया —(**इतमिनान के साथ**) अरुण के पास पैसा नहीं है तो क्या हुआ, यार दोस्त उन पर जान देते हैं। दो-चार सौ उसके हाथ की मैल है।

तिकड़म मल—लेकिन वलवल सिंह......... !

ढनमनिया —छोड़ो सेठ जी, नेता जी चुनाव हार गये तो क्या पेट पर पट्टी वाँध लें। दायें-वायें कहीं से तो पैसा आना ही चाहिये।

तिकड़म मल—(**बेचैन-सा**) जरा अस्पताल में टेलीफोन करो गुरु।

(**ढनमनिया गुरु रिसीवर उठाकर डायल घुमाते हैं**)

ढनमनिया —हलो...रमेश वावू...हाँ...हाँ...हाँ...नमस्कार! (**रिसीवर रख देता है। तिकड़म मल को ओर देखकर**) खून वहुत गिरा है। अस्पताल में बहुत भीड़ है।

(**तिकड़म मल चिन्ताग्रस्त नजर आते हैं**)

तिकड़म मल—अरुण जरूर होगा वहाँ और उसकी जवान पर लगाम नहीं है।

(**हाँफते-हाँफते अरुण का प्रवेश**)

अरुण —(**ढनमनिया से**) मंडलानन्द जी कहाँ है गुरु?

ढनमनिया —अस्पताल गये हैं। क्या हाल है सुनील का? कौन लोग थे?

अरुण —सब मालुम हो जायगा (**जाते जाते**) अभी मैं अस्पताल जा रहा हूँ ।

ढनमनिया —(**उठ कर टोकते हुए**) आपका टेलीफोन मिलने के बाद ही अस्पताल चले गये ।

अरुण —ठीक । मैं पुलिस थाने पर था ।

ढनमनिया —(**उत्सुकतापूर्वक**) क्या कर रही है पुलिस ?

अरुण —मुस्तैद तो है लेकिन......

ढनमनिया —कुछ शक....... !

अरुण —थाने पर बहुत भीड़ है । लोग उबल पड़े हैं । उनको ही शांत करने में पुलिस लगी है ।

ढनमनिया —आप का खयाल......

अरुण —(**तेजी से जाते-जाते**) अस्पताल जरूरी है ।

(अरुण का गमन)

ढनमनिया —(**अपनी जगह पर बैठते हुए**) मंडलानन्द जी आयें तो कुछ पता चले ।

तिकड़म मल—अस्पताल चलोगे गुरु ?

(ढनमनिया गुरु विचार-मग्न नजर आते हैं)

ढनमनिया —(**सेठ पर नजर गड़ा कर**) मुझको बलबल सिंह से भय है ।

तिकड़म मल—कैसा भय ?

ढनमनिया —शायद मंडलानन्द जी से वह आपके... .. ।

 (ढनमनिया गुरु पुनः विचार-मग्न हो जाते हैं)

तिकड़म मल—क्या कहते हो गुरु ? राजनीति चलेगा तो मैं भी चलूँगा ।

(**टेलीफोन की घंटी बजती है । गुरु रिसीवर उठाते हैं**)

ढनमनिया —हलो....कौन साहब...डंकानन्द जी...हाँ...हाँ... देता हूँ । (**रिसीवर तिकड़म मल को दे देता है**) ।

तिकड़म मल—हलो...नमस्कार...थोड़ी देर में...हाँ ! (**रिसीवर रख देता है**) ।

ढनमनिया —होशियारी से सेठ जी । मामला नाजुक है ।

तिकड़म मल—मतलब ?

ढनमनिया —बताना होगा ?

तिकड़म मल—ऐसे मामले में भी मजाक अच्छा नहीं गुरु ।

ढनमनिया —मजाक नहीं करता हूँ सेठ जी । अरुण बाबू कुछ हल्ला मचायें, इसके पहले ही नक्शा बँध जाना चाहिये ।

तिकड़म मल—कैसा नक्शा ?

ढनमनिया —(**गर्दन आगे ले जा कर धीमे से**) पुलिस किसी नतीजे पर पहुच जाय ।

तिकड़म मल—जाँच किये बगैर ?

ढनमनिया —जाँच से पहले ही !

तिकड़म मल—यह कैसे होगा ?

(**ढनमनिया गुरु मुस्कराते हैं**)

ढनमनिया —पैसे से सब कुछ हो जाता है सेठ जी ।

तिकड़म मल—पैसा........ ?

ढनमनिया —(सेठ की ओर झुक कर) पैसा... .. !

(तिकड़म मल घूर-घूर कर गुरु को देखते हैं। गुरु मुस्कराते हैं। सेठ टेंट से एक-एक सौ के दो नोट निकाल कर गुरु को देता है)

तिकड़म मल—(उठते हुए) भेंट करना गुरु। जा रहा हूँ।

(ढनमनिया गुरु नोट टेंट में लगाते हैं। तिकड़म मल का गमन)

ढनमनिया —(अकेले में) ऐसा धोबिया पाट मारूँगा कि बेटा सेठ भी याद करेगा।

(कुछ क्षणों तक शान्ति। मंडलानन्द, बलबल सिंह, वंचक का प्रवेश)

मंडलानन्द —(बैठते हुए) यह कमीनापन है।

(ढनमनिया गुरु मंडलानन्द का मुँह ताकते हैं)

ढनमनिया —कुछ पता चला ?

मंडलानन्द —(बलबल सिंह से) क़ाफी चोट आ गयी है।

वंचक —अरुण बाबू बहुत गम्भीर हैं। शायद उनको किसी पर शक भी है।

मंडलानन्द —अरुण अभी आयेगा।

बलबल सिंह—मुझको लगता है कि अरुण के ही किसी झमेले की चपेट में सुनील बाबू आ गये हैं।

वंचक —अरुण बाबू का क्या झमेला होगा। पर्चेबाज अखबारिया तो कई दिनों से सुशील बाबू के पीछे पड़े हैं।

मंडलानन्द —(**गम्भीर रूप में**) अच्छा नहीं हुआ।

बलबल सिंह—सुनील बाबू तेज-तर्रार हैं ही। किसी ने ठान ली होगी।

ढनमनिया —रुपया तो नहीं खाते हैं। दलाली तो नहीं करते हैं। साफ बोलते हैं। चोर को चोर कहते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि उनका कतल करा दिया जाय। पार्टी को मामला हाथ में लेना चाहिये।

बलबल सिंह—हाँ, बैठक बुला कर प्रस्ताव तो पास करना ही चाहिये।

वंचक —केवल प्रस्ताव से काम नहीं चलेगा! प्रदर्शन करना···।

मंडलानन्द —क्या बेवकूफी है। प्रस्ताव, प्रदर्शन, हड़ताल—यह भी कोई इलाज है!

ढनमनिया —कुछ न होने से बुरा असर पड़ेगा।

वंचक —ठीक कहते हो गुरु।

बलबल सिंह—छीः, कहीं किसी में दम नहीं रह गया है।

ढनमनिया —(**व्यंग के स्वर में बलबल सिंह से**) खाने-कमाने से फुर्सत नहीं है। दम क्या रहेगा—कद्दू?

बलबल सिंह—खाये-कमाये बिना काम भी तो नहीं चलता है। ई ससुरी राजनीति बहुत खराब हो गयी है।

(अरुण का प्रवेश। वह मंडलानन्द को नमस्कार करता है। फिर अलग-अलग सबको देखता है)

मंडलानन्द —अस्पताल से आ रहे हो ?

अरुण —(**बैठते हुए**) जी हाँ ।

मंडलानन्द —क्या हाल है अब ?

अरुण —सुनील के ग्रुप का खून मिलने से चिंता दूर हो गयी है ।

मंडलानन्द —कुछ पता चला ?

अरुण —(**तिरछी नजर से बलवल सिंह की ओर देखकर**) नहीं चला है तो चल जायगा । मैं यों ही नहीं छोड़ दूँगा । साजिश का भंडाफोड़ करना ही होगा ।

मंडलानन्द —साजिश क्या हो सकती है ?

अरुण —साजिश है और गम्भीर मालूम होती है । अभी-अभी मेरे वकील दोस्त ने कहलाया है कि डंकानंद के किसी चेले ने मेरे खिलाफ फौजदारी में मान-हानि का दावा दायर किया है । आरोप यह है कि मैं सेठ तिकड़म मल को गाली दे रहा था । उसने रोका तो कई आदमियों के सामने मैंने उसका अपमान किया ।

मंडलानन्द —ऐसा कुछ हुआ था ?

अरुण —(**आवेश में**) यह सब तिकड़म है । मेरा मुँह बन्द रखने की साजिश रची गयी है ।

मंडलानन्द—(**उत्तेजित से**) अजीब बात है ।

अरुण —मैं सब देख लूँगा । पुलिस ढिलाई न करे, इसलिए आपके पास आया हूँ ।

मंडलानन्द —कोतवाल से ग्रस्पताल में ही मिला था। शाम को कप्तान ग्रायेंगे। उनसे भी वात करूँगा।

ढनमनिया —(**अरुण से**) कुछ करना हो तो वताइये। ढनमनिया गुरु तैयार हैं।

अरुण —जो कर रहे हो गुरु, वही करो। तिकड़म मल से दोस्ती···।

वलवल सिंह—(**चौंककर**) तिकड़म मल वाली वात मेरी समझ में नहीं आयी।

अरुण —(**व्यंग के स्वर में**) तिकड़म मल के पास पैसा है। जिसके पास पैसा है, उसकी वहुत सी वातें समझ में नहीं ग्राती हैं।

ढनमनिया —(**कुछ सोचते हुए**) यह कैसे मालूम हुग्रा कि दावा डंकानन्द के पिट्ठू ने दाखिल किया ?

अरुण —हो निरे चोंच गुरु ! लगे वकील की तरह जिरह करने।

ढनमनिया —अरे संगीन मामला है, विना समझे-वूझे फेरवट कैसे वाँधा जायगा।

अरुण —तिकड़म मल से तो बात हुई होगी। पहली बार मेरे आने पर आप दोनों ग्रकेले थे।

वलवल सिंह—ग्ररे, तिकड़म मल यहीं डटे थे !

ढनमनिया —(**वलवल सिंह से**) वहुत देर तक उनको फाँस रखा था। फिर चले गये।

अरुण —ऐसे ही ?

ढनमनिया —टेलीफोन मिला था।

अरुण —किसका ?

ढनमनिया —शायद डंकानन्द का था ।

वंचक
बलबल सिंह } (**एक साथ**) डंकानन्द का !

बलबल सिंह—मैं अभी पता लगाता हूँ ।

वंचक —मैं भी चलता हूँ ।

बलबल सिंह—(**वंचक को रोककर**) आप ढनमनिया गुरु के साथ रहिये वंचक जी । शाम को मुलाकात होगी ।

ढनमनिया —(**वंचक से**) मेरे साथ कहाँ जाओगे । अपने रमता जोगी, नहीं तो भोगी ।

वंचक —(**चिढ़कर**) ठीक है, मैं किसी के साथ नहीं, अकेला ही जाऊँगा ।

(**टेलीफोन की घंटी बजती है । गुरु लपक कर रिसीवर उठा लेते हैं**)

ढनमनिया —हलो···क्या···हाँ···हाँ, कहाँ···अच्छा···ठीक··· जरूर···जरूर !

(**मंडलानन्द तेज निगाह से गुरु को देखते हैं**)

मंडलानन्द —किसका टेलीफोन था ?

ढनमनिया —यह तो नहीं मालूम । तिकड़म मल ने टेलीफोन कराया था ।

मंडलानन्द —क्या बात है ?

ढनमनिया —मुझको बुलाया है ।

अरुण —(**चौंककर**) गुरु सावधान रहना ।

ढनमनिया —(**मुस्करा कर**) गुरु पात-गात चलना जानते हैं अरुण बाबू । तुम बेफिक्र रहो ।

बलबल सिंह—(**गुरु से**) मैं जा रहा हूँ गुरु ! चलना हो तो चलो ।

ढनमनिया —अरे क्या चलो । दाना-पानी बिना डोलना मुश्किल है । आप चलो, अपने राम भी संझा-सबेरे पहुँच जायँगे ।

अरुण —क्या हाल है पार्टी का ?

वंचक —तीखी बातों से ही नुनकसान होता है अरुण बाबू ।

अरुण —तस्करों और ब्लैकमार्केटियरों के साथ मीठी बात करने से तो फायदा होता है न ?

बलबल सिंह—(**सरोष**) कौन नहीं करता बात ! आप तिकड़म मल से मिलते-जुलते नहीं क्या ?

अरुण —मैं बिकता कहीं भी नहीं ।

बलबल सिंह—(**क्रुद्ध हो कर**) कोई किसी का दबैल नहीं है ।

अरुण —मुझको सब मालुम है !

ढनमनिया —अरे छोड़िये अरुण बाबू ! सुनील बाबू तो चोट खा ही गये । अब आगे की बात देखनी चाहिये ।

अरुण —(**शांत होकर**) सुनील बाबू चोट खा गये । अरुण की जबान बन्द कर दी गयी । यार-दोस्त दूर की हाँकने में...... ।

मंडलानन्द —इससे क्या फायदा भाई । यह भी होता है । देखा जायगा ।

अरुण —देख तो रहे हैं आप। कैसे मुकावला होगा ?

मंडलानन्द —(शान्त भाव से) होगा मुकावला। कोतवाल से वात कर चुका हूँ। कप्तान से भी वात होगी ही। कानून अपने ढंग से चलेगा न ?

वंचक —लोग यही तो नहीं समझते और यह मान कर चलते हैं कि वह जैसा चाहेंगे, वैसा हो जायगा।

वलवल सिंह—समझाने पर कोई समझना नहीं चाहता। मैंने खुद सुनील बाबू से कई बार कहा था—कोई क्या है, इस झमेले में पड़ने से क्या लाभ। अपना काम देखना चाहिये।

ढनमनिया —आपस में कचकच से सव चौपट हो गया। सुनील वावू चोट खा गये। इधर मैल भी पैदा हो गया। फायदा उठाने के लिए आगे आ गये डंकानन्द ऐसे लोग।

वलवल सिंह—(तैश में) आयेंगे ही। हम लोगों को साथ नहीं रख सकेंगे, तो यही होगा।

अरुण —साथ रखने का अर्थ यही है कि चोर-चाइयाँ...।

मंडलानन्द —(झिड़क कर) इस वकवाद से क्या फायदा जी। राजनीति है। मेल-जोल जहाँ तक सम्भव हो, वनाये रखना चाहिये।

ढनमनिया —चलिये अरुण बाबू, अस्पताल चला जाय।

अरुण —मैं तो जाऊँगा ही गुरु। काँटे से काँटा निकालना मुझको भी आता है। किसके पास कितना पैसा है, यह भी देख लूँगा।

वलवल सिंह—ऐसी ऊट-पटाँग वातों की ही वजह से सुनील वावू धोखा खा गये ।

अरुण —(बलबल सिंह पर नजर गड़ा कर) अरुण भी धोखा खायेगा । यही न ?

वंचक —गलत रास्ते पर चलने से कोई भी धोखा खा सकता है ।

अरुण —सही रास्ता सिर्फ तिकड़म है ।

बलबल सिंह—तिकड़म ही दिमाग पर छाया हो, तो वही नजर आयेगा ।

अरुण —आयेगा ही । न आने पर टुटपूँजिया अखवार-नवीसों को छना-फुंका कर दलाली कैसे को जायगी ?

वलवल सिंह—(आवेश में) दलाल ही यह जान सकते हैं ।

अरुण —(बलबल सिंह से) ऐसे दलालों को सेठ तिकड़म मल खूव पहचानते हैं ।

ढनमनिया —(अरुण से) धीमे, जरा धीमें अरुण बाबू । पहचानने पर सेठ जी की मोनोपोली नहीं है । पहचानने में ढनमनिया गुरु भी माहिर हैं ।

अरुण —मजाक नहीं अच्छा लगता गुरु ।

ढनमनिया —लेकिन अच्छा लगना चाहिये । अरे चटनी-अचार के विना भोजन में क्या मजा ।

अरुण —तुम्हारा चटनी-अचार भी नजर आ जायगा । अब डंकानन्द भी सलाहकार हो गये हैं ।

ढनमनिया —(**उपेक्षा से**) ऐसी की तैसी डंकानन्द की। ऐसे चमर-गदाई मैंने बहुत देखे हैं। सेठ तिकड़म मल बेगाने हो जांय तो अपनी ही कमजोरी से होंगे।

बलबल सिंह—अरे छोड़ो गुरु, बराबर गाली सुनते रह कर कोई कब तक साथ दे सकता है ?

वंचक —जबान चलाने से न तो कोई तीसमार खाँ बना है, न बन सकता है।

ढनमनिया —सचमुच, सेठ जी के साथ अन्याय हो रहा है।

अरुण —और सेठ की साजिश का शिकार होने वाले सुनील के साथ न्याय !

बलबल सिंह—(**आवेशपूर्ण तेज आवाज में**) यह सरासर झूठ है।

अरुण —मैं साबित कर दूँगा कि यही सच है।

बलबल सिंह—(**ऐंठ कर**) ऐसे साबित करने वाले बहुत देखे हैं।

अरुण —नहीं देखे हैं बलबल सिंह। अब नजर आ जाँयगे। सारा शहर देख लेगा कि तिकड़म मल के मददगार डंकानन्द ही नहीं, बलबल सिंह भी थे।

बलबल सिंह—(**खड़े होकर क्रोध से काँपते हुए**) देख लेगा तो देख लेगा। ऐसी बन्दर घुड़की मैंने बहुत सुनी है।

मंडलानन्द —यह सब बकवाद बन्द कीजिये। जिसको जो देखना-सुनना हो बाहर जा कर देखिये-सुनिये।

(वंचक का हाथ पकड़ कर बलबल सिंह उठा लेता है)

बलबल सिंह—चलो वंचक, सिर फिरे के मुँह लगने से बात बढ़ेगी।

(वंचक को खींच कर बलबल सिंह ले जाता है। मंडलानन्द धरती पर नजर गड़ा देते हैं। ढनमनिया गुरु उनका मुँह ताकते हैं)

ढनमनिया —बेकार तिल का ताड़ बन रहा है।

(मंडलानन्द नजर उठा कर ढनमनिया के मुँह पर जमा देते हैं)

मंडलानन्द —क्या सचमुच तिकड़म मल ने कोई शरारत की है।

ढनमनिया —तिकड़म मल सब कुछ कर सकते हैं। (**जेब से एक सौ का नोट निकाल कर दिखाते हुए**) पुलिस किसी के दबाव में न आये, इसके इन्तजाम के लिए यह मुझको दे गये हैं।

मंडलानन्द —(**भृकुटी चढ़ा कर**) क्या मतलब ?

ढनमनिया —मतलब समझने के लिए मुझको सेठ जी से मिलना होगा। जिद पकड़ ली थी, इसलिए मैंने भी टालने के लिए ही जिद नहीं की।

मंडलानन्द —(**साँस खींचते हुए**) तुम लोगों की माया भगवान ही समझ सकते हैं।

ढनमनिया —(**मुस्कराते हुए**) अरे इस में माया क्या है! सेठ जी की सुनील से पटती नहीं। सेठ जी सोच सकते हैं कि इस मामले में उनको घसीटा जा सकता है।

मंडलानन्द —ऐसा न हो, इसलिए रकम ढनमनिया गुरु को सुपुर्द कर गये (**धीमे से हँसते हैं**)।

ढनमनिया —और क्या करेंगे। ऐसे, पटा रखा है बलबल सिंह को लेकिन अटकने पर ढनमनिया गुरु ही नजर आते हैं।

मंडलानन्द —अरुण का रुख सेठ जी के प्रति अच्छा नहीं है।

अरुण —अच्छा-बुरा क्या है। सेठ की चाल है और मैं इसका भंडाफोड़ करूँगा।

(**मंडलानन्द उठ कर खड़े होते हैं। गमन के लिए तैयार हो कर ढनमनिया गुरु को देखते हैं**)

मंडलानन्द —मैं चला। झगड़ा-फसाद बढ़ने न पाये, यह देखना चाहिये।

(**मंडलानन्द का गमन**)

अरुण —(**ढनमनिया से**) गुरु एक सौ रुपये का नोट हथिया लिया तुमने !

ढनमनिया —लो, आयी रकम कौन छोड़ता है ! सेठ सोचता है कि मैंने फाँस रखा है। मैं सोचता हूँ कि सेठ फँसा समझ कर रकम गलता है तो गलने दो।

अरुण —(**नजर गड़ा कर**) ठीक-ठीक बताओ गुरु, तिकड़म मल का हाथ है या नहीं ?

ढनमनिया —हो सकता है (**मुस्कराता है**)।

अरुण —और बलबल सिंह ?

ढनमनिया —टुकड़ गदाई है।

अरुण —मदद करोगे ?

ढनमनिया —(आँखें फाड़ कर) क्या कहते हो अरुण बाबू ! सुनील बाबू मेरे दोस्त हैं। गुरु जिसको दोस्त मानते हैं, उसके लिए जान लड़ा देते हैं। हाँ, तरीका गुरु का अपना होता है। गुरु साँप भी मारते हैं और लाठी को भी टूटने से बचा लेते हैं।

अरुण —लेकिन गुरु इस बार तुम चूक गये।

ढनमनिया —चूक गये ! गुरु चूक गये ! (हँस कर) अरे अरुण बाबू, सेठ भी यही समझता होगा।

अरुण — सेठ शैतान है (हाथ से संकेत कर) जरा सेठ का नोट निकालो तो।

ढनमनिया —(आँखें फाड़ कर) नोट ! क्यों ?

अरुण —शायद वह नकली है।

ढनमनिया —(उछल कर) नकली !

अरुण —शायद नकली ही है।

ढनमनिया —(टेंट से नोट निकालते हुए) कैसे मालुम ?

अरुण —रंग से ऐसा लगा।

(ढनमनिया गुरु नोट अरुण को देते हैं। अरुण नोट ले कर जाँच करता है)

अरुण —नकली ही है गुरु !

ढनमनिया —(तमतमा कर) नकली हुआ तो सेठ को ठिकाने लगा दूँगा। कमबख्त समझता क्या है अपने को ? फँसाना चहता है मुझको ?

अरुण —अकेले तुमको ही नहीं। वह ऐसी सफाई से अपना खेल, खेल रहा है कि कोई उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

ढनमनिया —(**नोट दिखा कर क्रोध में**) यह नकली हुआ न अरुण बाबू, तो सेठ की होलिया तंग कर दूँगा।

(**घबराई हुई मुद्रा में हाफते-हाफते बलबल सिंह का प्रवेश**)

बलबल सिंह—(**ढनमनिया से**) गुरु, तुमको तिकड़म मल कोई नोट दे गये हैं ?

(**ढनमनिया प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखता है**)

बलबल सिंह—(**अधीर हो कर**) मजाक छोड़ो गुरु। मामला संगीन है। सेठवा जरा चूक गया। नहीं तो मारे जाते।

ढनमनिया —(**परेशान-सा**) क्या कह रहे हो नेता जी ? अपने पल्ले कुछ नहीं पड़ा।

बलबल सिंह—अरे गुरु, पहले नोट निकालो। नोट तुमको वह दे गया है। उसने मुझे बताया है।

ढनमनिया —(**खड़े हो कर**) क्या बताया है ?

बलबल सिंह—नोट...नोट...गुरु। जाल...पक्का...जाल। नोट निकालो, अभी बताता हूँ।

(**ढनमनिया गुरु टेंट से नोट निकाल कर बलबल सिंह को देते हैं**)

बलबल सिंह—(**नोट देख कर**) नकली, यह भी नकली है गुरु।

ढनमनिया —यह तो जानता हूँ नेता जी। तुमको भी क्या नकली ही मिला ?

वलवल सिंह—वच गया गुरु। नकली नोट चलाने में पकड़ा ही जाता। डंकानन्द ने ऐसा दाँव मारा कि मैं अंटा चित्त गिरने ही वाला था। तिकड़म मल के यहाँ गया तो उसने ऐसा तिकड़म रचा कि मुझको नोट ले कर भुनाने जाना पड़ा और……

ढनमनिया —(**तमतमा कर**) यही फरेव मेरे साथ भी……।

वलवल सिंह—वड़ा पाजी है सेठ !

ढनमनिया —उसको मजा न चखाया तो मेरा नाम ढनमनिया गुरु नहीं।

वलवल सिंह—लेकिन कैसे ?

अरुण —(**खड़े हो कर बाहर जाने की मुद्रा में**) तिकड़म को राजनीति समझने वाले इस 'कैसे' का जवाव कभी नहीं हासिल कर सकेंगे और ब्लैक मार्केटियरों की जूतियाँ चाटते रहेंगे।

(अरुण तेजी से बाहर चला जाता है। वलबल सिंह और ढनमनिया गुरु आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देखते रह जाते हैं)

INSTITUTE OF ADVA…
Acc. No. 39609
Date 18/5/72
SIMLA

• ड्राप •

हिन्दी प्रचारक संस्थान
वाराणसी

Library IIAS, Shimla
H 812.8 R 137 T
00039609

क॰ मुद्रक : विद्यामन्दिर प्रेस (प्रा.) लि., मानमन्दिर, वारा